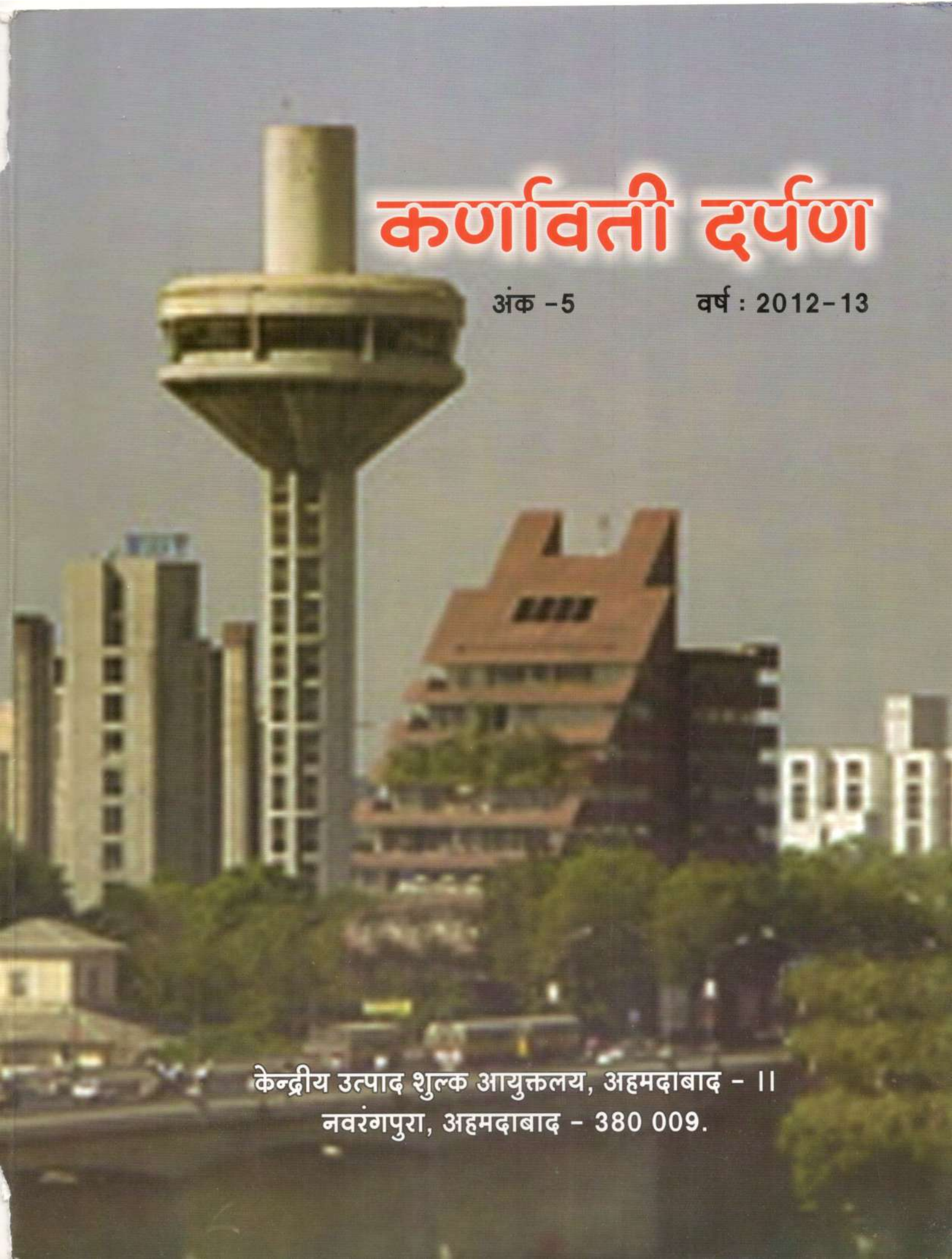

कर्णावती दर्पण

अंक -5 वर्ष : 2012-13

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तलय, अहमदाबाद - II
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009.

स्वतंत्रता दिवस
की झलकियाँ

विभागीय पत्रिका

अंक - 05 वर्ष : 2012-13

-: संरक्षक :-

श्री राकेश मिश्रा

मुख्य आयुक्त

-: प्रधान संपादक :-

श्री अशोक कुमार गुप्ता

आयुक्त

-: परामर्शदाता :-

श्री मानस रंजन मोहन्ती, अपर आयुक्त

श्रीमती वृंदाबा गोहिल, संयुक्त आयुक्त

-: सम्पादक :-

श्री आई. यू. देसाई

प्रशासनिक अधिकारी,

-: सहयोगी :-

श्री सनत जी. चौहान, प्रशासनिक अधिकारी

श्री प्रदीप मणि त्रिपाठी, निरीक्षक

श्री रणधीर कुमार, कर सहायक

श्री कौशल किशोर, कर सहायक

-: प्रकाशक :-

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II

सीमा शुल्क सदन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं । इसके लिए संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी दूसरे की रचना अपने नाम से भेजने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी इसके लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
1	बधाई	राकेश मिश्रा	3
2.	प्रधान सम्पादक की कलम से...	अशोक कुमार गुप्ता	4
3.	सन्देश	मानस रंजन मोहन्ती	5
4.	सन्देश	वृंदाबा गोहिल	6
5.	सम्पादकीय	ईलियास देसाई	7
6.	राष्ट्रगीत	बंकिमचंद्र चटर्जी	8
7	दूरगामी इलाज जरूरी है	डॉ. निम्बा राम	9
8	मैं तो फिर भी अच्छा हूँ	सुरेंद्र सिंह बारहठ	11
9	कविताएँ	प्रदीप मणि त्रिपाठी	12
10	सुकुमार बसन्त	श्याम सुन्दर	13
11	नोंक-झोंक	श्याम सुन्दर	14
12	पिता का खत	रवि शंकर	15
13	चुटकुला संग्रह	रवीन्द्रकुमार	16
14	कविताएँ	श्यामसुन्दर शर्मा	17
15	कार्टून	अनुश्री शर्मा	19
16	राजनीति की बात निराली	शाश्वत शुक्ला	20
17	कैसा विकास	चन्दन कुमार	21
18	कविता संग्रह	हेमन्त कुमार शर्मा	22
19	कविता संग्रह	एन. एन. पठाण	23
20	राजभाषा हिन्दी	आशीष कुमार	24
21	बेटी बचाओ	भाविका गुप्ता	25
22	निबंध		
	(क) देश में खेलों की स्थिति का आधुनिकीकरण	जयेश आर. छींकनीवाला	26
	(ख) आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति	हेमन्त कुमार शमा	30
	(ग) आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति	विकास कुमार गुप्ता	32
23	बलात्कार की सजा	लोकेश कुमार	35
24	चुटकूला संग्रह	शैलेश कुमार शमा	36
25	हिन्दी सप्ताह-2012 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम	-	38
26	कविताएँ	वेदप्रकाश गुप्ता	39
27	सार्वजनिक खरीदक्रम में पारदर्शिता द्वारा भ्रष्टाचार मुक्त भारत	आशीष कुमार	40
28	लघु कथा : संत और बेरोजगार	आशीष कुमार	45
29	दहाड़ता गीर	एम. पी. राठौड़	43

बधाई

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-।। द्वारा विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के पाँचवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी संवैधानिक रुप से भारत की प्रथम राजभाषा तो है ही, साथ ही यह भारत सहित विश्व के अनेक देशों में बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

''कर्णावती दर्पण'' जैसी राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन अधिकारियों / कर्मचारियों की रचनात्मक क्षमता के लिए अनुकूल मंच प्रदान करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रति अनुकूल वातावरण तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

''कर्णावती दर्पण'' के इस अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं अपनी रचनाओं से योगदान करने वाले सभी लेखकों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

(राकेश मिश्रा)
मुख्य आयुक्त,
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,
अहमदाबाद प्रक्षेत्र

प्रधान संपादक की कलम से

हिन्दी अपने आप में एक समर्थ भाषा है । प्रकृति से यह उदार, ग्रहणशील, सहिष्णु और भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है ।

राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयासों के कारण विभिन्न कार्यलयों में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है । राजभाषा खुले आसमान के नीचे पनप रही है । राजभाषा कार्यन्वयन में असंख्य उल्लेखनीय कार्यों का अनवरत सिलसिला जारी है । कर्मचारियों द्वारा राजभाषा के प्रयोग में हिचकिचाहट कम हो रही है तथा राजभाषा को अपने कार्य में सम्मिलित करने का प्रयास जारी है ।

इसी क्रम में ''कर्णावती दर्पण'' के पाँचवें अंक का प्रकाशन इस आयुक्तालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में सृजनात्मकता का द्योतक है ।

आशा है, ''कर्णावती दर्पण'' पत्रिका का वर्तमान अंक राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु सकारात्मक वातावरण के निर्माण में उपयोगी सिद्ध होगा । इसके प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाइयाँ ।

(अशोक कुमार गुप्ता)
आयुक्त,
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,
अहमदाबाद - II

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गरिमा का विषय है कि विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के पाँचवे अंक का प्रकाशन हो रहा है।

हिन्दी को देश में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। भारत जैसे विशाल देश में राजभाषा बेहद महत्वपूर्ण सूत्र है, जो देश को एकजुट रख सकता है।

देश को एक सूत्र में बाँधने वाली राजभाषा हिन्दी की उन्नति भी हमारी ही जिम्मेदारी है और इस जिम्मेदारी के निर्वाह का एक माध्यम है, ऐसी पत्रिकाओं का प्रकाशन ।

यह खुशी की बात है कि पत्रिका के प्रकाशन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ ही उनके परिजनों ने सृजनात्मक सहयोग किया है।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को साधुवाद देता हूँ तथा इस पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(मानस रंजन मोहन्ती)
अपर आयुक्त,
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,
अहमदाबाद - II

संदेश

विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के पाँचवे अंक के प्रकाशन पर मुझे प्रसन्नता हो रही है । ''कर्णावती दर्पण'' से अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा के प्रयोग के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन मिलता है एवं उन्हें अपनी साहित्यिक प्रतिभा उजागर करने का अवसर प्राप्त होता है ।

हिन्दी हिन्दुस्तान को बाँधती है । कभी गांधीजी ने इसे जनमानस की भाषा कहा था तो इसी हिन्दी की खड़ी बोली को अमीर खुसरो ने अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनाया ।

सरस, सरल एवं सहज भाषा हिन्दी की महत्ता समझते हुए भारतीय संविधान ने इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है । अतः राजभाषा हिन्दी के व्यापक उपयोग एवं प्रसार की आवश्यकता है । ''कर्णावती दर्पण'' के पाँचवे अंक का प्रकाशन इसी दिशा में इस कार्यालय का एक प्रयास है ।

पत्रिका के लिए जिन अधिकारियों व कर्मचारियों ने रचनायें दी हैं वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ ।

वृन्दाबा गोहिल

(वृन्दाबा गोहिल)
संयुक्त आयुक्त,
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,
अहमदाबाद - II

संपादकीय

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद- II की विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के पाँचवें अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव पर रहा हूँ। पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में सहायक होने के साथ ही कार्यालय में राजभाषा के प्रति अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने के लिए एक सफल मंच है।

''कर्णावती दर्पण'' पत्रिका का पाँचवां अंक कुछ रचनाओं का संकलन मात्र न होकर आयुक्तालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों की संवेदनाओं और अनुभूतियों का प्रतिबिम्ब बन सके इसलिए पत्रिका में बहुआयामी रचनाओं सहित विभाग के कार्यकलापों की झलक भी प्रस्तुत की गई है।

पत्रिका के प्रकाशन के विषय में पाठकों के सुझावों एवं विचारों का स्वागत है।

(आई. यू. देसाई)
प्रशासनिक अधिकारी (मुख्यालय)

वंदे मातरम्
सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलाम् मातरम् ।
वंदे मातरम् ।

शुभ्रज्योत्सना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम् ।
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम वरदाम् मातरम् ।
वंदे मातरम् ।

दूरगामी इलाज जरूरी है

कितने युगों के उपरांत
कितनी बलियों के पश्चात्
आज एक नयी नारी जन्मी है
अब अबला नहीं, सबला है
वह बंदी नहीं, मुक्त है
वह प्यादा नहीं, रानी है
वह पीड़ित नहीं, उल्लासित है
वह भयभीत नहीं, निर्भय है
आओ सब मिलकर उसका अभिनंदन करें ।

- नरेन्द्र लूथर (साभार-"मिलाप")

यह लेख उस भारतीय बेटी को समर्पित है, जो देश को जगाकर खुद सदा - सदा के लिए सो गई । भारतवर्ष के महान इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं हुआ, कोई घटना नहीं घटी, कभी ऐसा हुआ ही नहीं कि एक आम इंसान ने सारे देश में इस तरह जनजागृति फैला दी हो, असाधारण राष्ट्रीय रोष पैदा कर दे, छोटे - बड़े सभी की प्रेरणा बन जाए । अब प्रश्न उठता है कि उस चिर यौद्धा की क्रांति को तार्किक परिणाम कौन और कैसे देगा ? यहां हमारी परिपक्व पीढ़ी (शिक्षकों, कलाकारों, चिकित्सकों, अभियन्ताओं, नागरिक सेवकों, अधिवक्ताओं न्यायविदों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों) पर महत्वपूर्ण दायित्त्व होगा । निस्संदेह अब मरहम-पट्टी कर देने भर से घाव नहीं भरेगा, दूरगामी इलाज जरूरी है । भविष्य में घाव हो ही न पाए , ऐसा रास्ता ढूँढना पड़ेगा, वास्तव में यह रोग समाज का है और हम इसका राजनीतिक - कानूनी उपचार ढूँढ़ रहे हैं। कानून का बड़े पैमाने पर समाज के साथ जोड़ना जरूरी है, लड़कों की परवरिश भी स्त्री - पुरुष के बीच के फासलों को मिटाने वाला होना चाहिए । भारतीय स्त्री ने इसे दुष्कर्म से पीड़ित एक लड़की की मौत नहीं माना है, यह भारतीय समाज पर स्त्री के भरोसे की मौत के रूप में देखा है, यह भारतीय स्त्री की भारतीय समाज से उम्मीद की मौत है । इसलिए भारतीय समाज ने अपनी आस्मिता की सुरक्षा के लिए स्वत:स्फूर्त प्रदर्शन किए और भारतीय स्त्री के उम्मीद को जिंदा रखने का प्रयास किया । इस बात में कतई गलतफहमी नहीं है कि आजादी के बाद एक अलोकतांत्रिक समाज के ऊपर लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था तो थोप दी गई लेकिन दोनों के बीच सामंजस्य आज तक स्थापित नहीं हो पाया । सामाजिक समानता का मूल्य और आदर्श केवल संविधान में दर्ज है, समाज के दानंदिन, व्यावहारिक जीवन में उसके दर्शन भी नहीं होते । आधुनिकता और शहरीकरण के दबाव के कारण लड़कियों के पढ़ने और नौकरी करने को मजबूरन स्वीकार करने के बाद भी अधिकार भारतीय परिवार इस कड़वी सच्चाई को पचा नहीं पाए हैं । पूरे समाज में यह धारणा फैली है कि स्त्री का अपना कोई स्वतंत्र

अस्तित्त्व, व्यक्तित्व और जीवन नहीं है । ऐसे जब कोई शिक्षित युवती किसी पुरुष मित्र के साथ रात या दिन में सार्वजनिक स्थान पर साथ-साथ देखे जाते हैं तो समाज के कुछ लोग उसे सहज सुलभ मान लेते हैं, बदतमीजियों का विरोध होने पर गुस्सा करते हैं, कि खुल्लम खुल्ला घूमने वाली इस लड़की की यह मजाल । दरअसल यह मानसिकता से जुड़ा प्रश्न है परंतु चर्चा होने लगी कि लोगों में कानून का खौफ होना चाहिए । कई अन्य मामलों में कठोर सजा का प्रावधान है लेकिन वे अपराध भी नहीं रुक रहे हैं । लिहाजा अब समय महिलाओं के प्रति संपूर्ण समाज की मानसिकता और दृष्टिकोण में बदलाव लाने का है । एक पुरुष घर में अपनी बहन को लेकर प्रोटेक्टेव (सुरक्षात्मक) होता है, लेकिन सड़क में चलती हर लड़की के लिए उसमें वह प्रोटेक्शन, बहन अथवा बेटी का भाव नहीं आता । आज जितना लड़कियाँ पढ़-लिख रहीं हैं, या घर से बाहर आ रही हैं, उन्हें यह महसूस कराया जा रहा है कि उनकी आजादी उनके लिए कितनी डरावनी है, या हो सकती है। बाहरी कानून और व्यवस्था को दुरुस्त करने से ज्यादा जरूरी समाज में बदलाव की है । लड़कों को महिलाओं का आदर सिखाने के लिए एक अलग से कार्यक्रम तैयार किया जाना जरूरी है । केवल शहरों में ही लड़कों को नैतिक शिक्षा न दी जाए बल्कि गांवों मे भी उसकी उतनी ही जरूरत है । महिला उत्पीड़न कानून व्यवस्था का मामला नहीं है बल्कि यह समाज और संस्कृति का मामला है । इसलिए यह नया मानवीय समाज और अदालत मामला है । लिहाजा हमें कानून, पुलिस और अदालत से आगे सोचना चाहिए । स्त्री को अपने भीतर ये ताकत जुटानी होगी कि वो उत्पीड़न के भय से उबर सके, उससे लड़ सके। मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी समाज की हिंसा और निजी दुर्भाग्य का शिकार हुई स्त्री जब होश में आती है तो उसे पहली चिंता यह होती है कि किसी को मालूम तो नहीं। कितना बड़ा दबाव है एक स्त्री के मन में कि जैसे ये उसकी किसी प्रकार की अपवित्रता या अशुद्धता है, स्त्री को समाज में अपने जाने के कानून अपने हिसाब से बनाने होंगे। पिछले कुछ समय से देखने में आ रहा है कि जब भी महिलाओं के उत्पीड़न की कोई बड़ी घटना घटती है तो कुछ लोगों की ओर से महिलाओं को नसीहत देने वाले बयान दिए जाने लगते हैं, विशेषकर उनके परिधान, रहन-सहन और जीवन शैली को लेकर। किसी भी सभ्य समाज में इस तरह के विचारों को स्वीकार नहीं किया जा सकता । महिलाओं को यह अधिकार है कि वे जैसे जीना चाह, वैसे जिए। ज्यादा जरूरी यह है कि पुरुष अपनी उस मानसिकता से मुक्त हो जिसके चलते महिलाओं का उत्पीड़न थम नहीं रहा है।

महिला उत्पीड़न एक राष्ट्रव्यापी समस्या है परन्तु इसे केवल दिल्ली केन्द्रित किया जा रहा है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए समूचे देश में कदम उठाने की जरुरत है क्योंकि दिल्ली भारत नहीं है, न ही पूरे भारत को दिल्ली में समाहित किया जा सकता है। इसलिए पूरे देश के बारे में सोचना चाहिए। पुनः समस्या संपूर्ण समाज से जुड़ी है, अतःसमाज में परिवर्तन, सोच बदलने एवं मानसिकता में परिवर्तन लाने की जरुरत है।

डॉ. निम्बा राम
सहायक आयुक्त

मैं तो फिर भी अच्छा हूँ

लाख कोशिशों के बाद भी मैं रोजगार ना पा सका,
और जूतों के अभाव में मैं पार्टी में ना जा सका
हारकर अंत में मैंने कमजोर दिल की बात मान ली
मन ही मन मैंने मरने की ठान ली
मेरा अपने आप से मरने का वादा था
ट्रेन से कटकर मरने का इरादा था
यह सोचकर मैं सोचते-सोचते चलता गया
अंत में जब मरने वाला फाटक आ गया
इरादा बड़ा सख्त था
पर ट्रेन के आने में अभी थोड़ा वक्त था
तभी देखा एक इंसान को, जिसके जूते पहनने को पैर ही ना थे
उसके तो अपने ही नहीं, मेरे तो सिर्फ गैर ही ना थे
वह भी जब इस हाल में जी रहा है
गम के सागर को घूंट - घूंट करके पी रहा है
यह सब सोचकर, मैंने अपना इरादा बदल लिया
पहले इधर-उधर देखा, फिर घर की ओर चल दिया
रास्ते में, मेरे दिल में सिर्फ एक ही विचार था
कि, मैं तो फिर भी अच्छा हूँ.....
कि, मैं तो फिर भी अच्छा हूँ.....

सुरेंद्र सिंह बारहठ
निरीक्षक

सोच

अगर आप सोचते हैं, कि आप हारे हैं,
तो हारे हैं।
अगर आप सोचते हैं, कि आपमें हौसला नहीं है,
तो सचमुच आपमें हौसला नहीं है।
अगर आप जीतना चाहते हैं,
लेकिन सोचते हैं कि जीत नहीं सकेंगे,
तो निश्चित है, कि आप नहीं जीतेंगे।
क्योंकि हम दुनिया में देखते हैं, कि
सफलता की शुरूआत इंसान की इच्छा से होती है।
अर्थात्, सबकुछ हमारी सोच पर निर्भर करता है।
अगर आप सोचते हैं, कि आप पिछड़ गए हैं,
तो आप पिछड़ गए हैं।
तरक्की के लिए आपको अपनी सोच ऊँची करनी होगी,
क्योंकि कोई भी सफलता प्राप्त करने के लिए आपको
अपने आप पर विश्वास करना होगा।
क्योंकि जीवन की लड़ाईयाँ सिर्फ तेज और मजबूत
लोग ही नहीं जीतते
बल्कि आज नहीं जीतता वही व्यक्ति है,
जिसे विश्वास है कि वह जीतेगा।

दुनिया है, अजायबघर

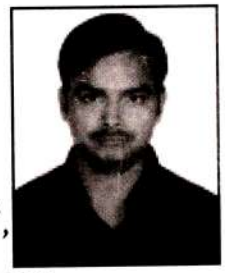

दुनिया है, अजायबघर,
यहाँ अजब-गजब होते देखा।
गरीब को देने के लिए पैसे नहीं,
पालतू कुत्ते पर दौलत लुटाते देखा।
माँ बाप ने बचाए महीनों, जो पेट काटकर
उसे बेटे को चुटकी में उड़ाते देखा।
संस्कारों की घुट्टी जो बचपन में पिलायी,
जवानी में उसे पानी-पानी होता देखा।
जिस लाड़ली की खरोंच से आह निकली,
दहेज के लिए उसे जलते देखा।
जिस देश में राम ने राज किया,
घर-घर में रावण को बैठे देखा
जिस देश ने विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ाया,
वहाँ पग-पग पर हिंसा होते देखा।
दुनिया है, अजायबघर,
यहाँ अजब गजब होते देखा।

प्रदीप मणि त्रिपाठी
(निरीक्षक)

बलवान का बल उसकी विनयशीलता में है। शत्रुओं को परिवर्तित करने के लिए बुद्धिमान का शस्त्र यही है।

- तिरुवल्लुवर

सुकुमार बसन्त

प्रचंड रहे यूँ ही ये यौवन इसका हे प्रभु! कभी अंत न आये।
राग भरूँ जीवन में ऐसा कि मस्ती के गीत दिगंत ये गाये।
अन्न, निधि यदि न हो समुचित द्वार मेरे प्रभु, संत न आये।
कंत न हो यदि घर में मेरे तो हे भगवंत! बसन्त न आये।

रक्तिम-पत्र भरा तरू लागे ऐसे लाल चुनरी में लिपटी नव-ब्याहता कोई।
देख जिसे किये श्रृंगार सोलह हृदय चोर कू-कू कोकिला रोई।
धूप खिली है लिये कितनी नरमी दिल मेरा फिर भी पिघलता जाये।
आग विरह की तपिष देती इतनी कि पत्थर भी धू-धू जलता जाये।
हेमाभ मंजरियों का ये सुन्दर अभूषण पहने तरू आज लगे हैं दुल्हन।
गुन-गुन करते मधुप इनपर कर रहे ऋतुराज का झूम आवाहन।

पराग बिखेर रही हैं वल्लरियाँ झूम रहे हैं कैसे वेणु।
मानो नवजात शिशु बिन व्याकुल उछलती–कुदती प्रसूता धेनु।
फूल-फूल से लदी ये नूतन शाखाएँ झुक गई हैं देखो कैसे?
अल्हड़ किशोरी बन जाये शर्मीली यौवन-भार से दबके जैसे।
कितनी लागे है सुन्दर पलास, इनमें मगर सुवास नहीं है।
फूल होकर भी है यह धूल सरीखा, इसमें सुरभि का वास नहीं है।

महके हैं गुलाब, फूली हैं सरसों, झूमती है अलसी बनके बावरी।
मस्ती में, पागल है सारा आलम- देख बसन्ती ब्यार बही ही !
देख लहलहाते फसल खेतों में, मेरा वीरान मन भी हरीयाया।
चुपके से बनके बसन्त मेरे मन-मधुवन में प्रिय तू है आया।
जीवन अनमोल यह-दो कौड़ी की लगती यदि इसमें यौवन का वास न होता।
प्यारी यह धरती स्वर्ग न लगती यदि ऋतुओं में मधुमास न होता।

श्याम सुन्दर
निरीक्षक

पुरुष के लिए आशा-पाश को काटने के लिए वैराग्य ही तलवार है।

- भागवत

नोंक-झोंक

पति - प्यार में तुमने नचा-नचाकर बन्दर मुझे बना डाला।

अरमानों के सारे टायर को कील चुभाकर पन्चर कर डाला।

पत्नी - तुम नाचे अपनी मर्जी से इसमें मेरी क्या खता है?

अरे इन्सान भी पहले बन्दर था क्या तुम्हें नहीं पता है?

पति - बेशक मुझे पता है, हूँ इतना अनाड़ी भी नहीं,

मगर उस दौर में सभी बन्दर थे तेरा जैसा मदारी था नहीं।

पत्नी - अपने उस कबीले में तुम जैसे निठल्ले भी खप जाते थे।

दूसरों की मेहनत की कमाई की दावत मजे से वो उड़ाते थे।

पत्नी - हद हो गई जब निठल्लेपन की तो हमें भी नकाब बदलना पड़ा।

परजीवियों से बचने के लिए जनाब-मदारी हमें बनना पड़ा।

पति - ए खुदा ! तेरी जहाँ में जुल्म कितना भारी हो गया।

ताज्जुब है कि बन्दर के समाज में नारी मदारी हो गया।

पति - नाइंसाफी का ये मंजर देख क्यों सूख नहीं जाता समंदर?

अरे बनना था जिसको सिकन्दर-नाच रहा है वो बनके बन्दर।

पत्नी - भाषण मत कर, चुप रह वरना कर दूँगी हवालात के अन्दर,

नचाने वाला रब होता है- मत भूलना ये कभी ए बन्दर।

पति - दिल जलता है तो कर लेता हूँ यूँ ही कभी-कभी फरियाद,

भूलकर भी इसे दिल पर मत लेना-ए मेरे आका मदारी-उस्ताद।

श्याम सुन्दर
निरीक्षक

पिता का खत

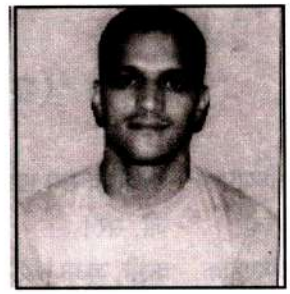

एक पिता का खत अपने...फौजी बेटे के नाम :
अक्सर तेरे खतों को सीने से लगा लेती है माँ तेरी,
तुझे याद करके चुपके से आसूँ बहा देती है माँ तेरी,

तेरे आने का आसरा देकर मैं अपनी बूढ़ी टांगों को समझाता हूँ,
जब दर्द बहुत बढ़ जाता है अपनी टांगों को खुद ही दबा लेता हूँ,

त्योहारों पर अक्सर तेरी कमी हमेंशा मुझे खल ही जाती है,
सरहद पर जंग छिड़ी है सुनके अक्सर तेरी बहन सहम जाती है,

खेत खलियानों में अब फसलें भी कम ही खिला करती हैं,
गावं की सुनी सड़कें आज भी तेरा इंतज़ार अक्सर करती हैं,

चाहे कुछ भी हो मैं तुझे कभी वापस गांव ना बुलाउँगा,
याद है, तूने कहा था,

इस मिट्टी में जन्म लिया है मैंने, इस वतन की मिट्टी में ही मैं अपनी जान लुटाऊँगा!.....
जय हिंद, वन्दे मातरम्, जय भारत.....

इज्जत

दिन सलीके से उगा रात ठिकाने से रही
दोस्ती अपनी भी कुछ दिन ज़माने से रही
चंद लम्हों को ही बनती है मुसाविर आँखें
जिन्दगी रोज तस्वीर बनाने से रही
इस अँधेरे में तो ठोकर ही उजाला देगी
रात जंगल में कोई शमा जलाने से रही
फासला चाँद बना देता है पत्थर को
दूर की रोशनी नज़दीक आने से रही
शहर में सब को कहाँ मिलती है रोने की फुर्सत
अपनी इज्ज़त भी यहाँ हँसने-हँसाने से रही..

रवि शंकर
कर सहायक

चुटकुला संग्रह
(प्रस्तुतकर्ता - रवि शंकर, कर सहायक)

अध्यापक - बच्चों, कसम खाओ कभी, शराब, सिगरेट तथा नॉन-वेज नहीं खाओगे।
बच्चे - जी, सर!
अध्यापक - कभी, जुआ नहीं खेलोगे।
बच्चे - जी, सर!
अध्यापक - कभी लडकियाँ नही छेड़ोगे।
बच्चे - जी, सर!
अध्यापक - देश के लिए जान भी दे दोगे।
बच्चे - दे ही देंगे सर, भला ऐसी जान का करेंगे भी क्या?

⌘⌘⌘

एक बार संता एक दाँतो के डाक्टर के पास जाता है और अपनी परेशानी बताता है।
डा. - वो तो सब ठीक है पर आपके के तीन दाँत कैसे टूटे?
संता - पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी।
डा. - अरे तो दांत तुड़वाने से अच्छा था कि आप खाने से मना कर देते।
संता - वही तो किया था।

सच्चाई

आज के अखबार में रंगीन इश्तहार देखिए,
कंक्रीट के जंगल में मकानों का बाज़ार देखिए ।
इन बंद दीवारों में हैं कैद अनगिनत हसरतों का अंबार,
जरा घुस कर तो देखिए ।
इन मकानों के दरम्यां कोई 'घर' शायद ही मिल पाए,
मिलेगी स्याह संवेदना, जरा झांक कर तो देखिए ।
हँसते मुखौटे देखकर मैं अक्सर गुमराह होता हूँ,
जिन्दगी के सच मायने बतौर,
हर किसी को लापरवाह देखिए ।

रवीन्द्रकुमार
निरीक्षक

कल और आज

कलियुग की इस काली घटा में आँधी ऐसी आई है ।
सस्ता हो गया खून यहाँ, पानी में महँगाई है ।।

गंगामृत चरणामृत का, नित्य रहा है पान यहाँ
दूध दही और छछिया से होता रहा है मान यहाँ
चाय, कोल्ड-ड्रींक्स क्या चीज है, अब मदिरा मदमाई है - सस्ता हो ....

अतिथि देवो भव: की, यहाँ रही है मर्यादा
प्राण देकर उसे बचाना, ऐसा रहा है यहाँ वादा
अब, सुबह-सुबह ये आफत, जाने कहाँ से आई है - सस्ता हो ....

रामकृष्ण से थे राजा, तबके शासन के दर्पण
यहाँ अनेकों हरिशचन्द्रों ने, शासन तक कर दिया अर्पण
प्राण जाये पर कुर्सी न जाए, ऐसी भावना विकसाई है - सस्ता हो ....

सब आपस में ये भाई प्रेम भावना थी छाई
हिंसा और ओतक की नहीं कहीं थी परछाई
खून बहा है आज धरा पर, खेंतो में लाशें छाई है - सस्ता हो....

यह वही है भारत धरा, जहाँ नारी पूजी जाती थी
जहाँ हर अर्चना बिना नारी, अधूरी मानी जाती थी
देखो आज वहीं नारी, बाजार में बिकने आई है - सस्ता हो ....

जापानी से पूछो तो, वह कहे मैं जापानी हूँ
मैं जर्मन, मैं अफ्रीकन, मैं भई नेपाली हूँ
इस देश के वासी बोले, हम हिंदू, मुस्लिम, ईसाई हैं सस्ता हो ....

सदियों से इस धर्म ने जीना सबको सिखलाया है।
मानवता के मार्ग को, मानव को दिखलाया है।
पर आज किसी को उसी धर्म में, साम्प्रदायिकता दिखलायी है- सस्ता हो ....

धर्म त्यौहार दशहरा और दीपों भरी ये दीपावली
रंग भरे त्यौहार को, भाभी संग खेले होली

अब सास पति और देखते ही जिंदा बहू जलाई है सस्ता हो ....

एक और भूखी ओते, एक और कुचे खाते
ढूँढे इस निर्जन जीवन में, कोई मूल्य नहीं पाते
और अधिक अब क्या कहें, आँख ही जब भर आई है सस्ता हो ....

कलियुग की इस काली घटा में, आँधी ऐसी आई है
सस्ता हो गया खून यहाँ, पानी में मँहगाई है।

⌘⌘⌘

महँगाई

चलता जाये रथ का पहिया, मंजिल का तो पता नहीं
कौन दिशा से कहाँ चले थे, अब तो यह भी पता नहीं

देकर वोट बनाये नेता, रामराज्य को लायेंगे
प्रजातंत्र से जनता के, सब दुख दूर भगायेंगे
लोकतंत्र तो हुआ खोखला, दीमक का तो पता नहीं ।।

रोटी कपड़ा और मकान ये प्रश्न आज भी प्रश्न है
हर जन महँगाई को रोता, ये किधर हो रहा जश्न है
रोटी को लेकर घमासान, दाल का कहीं पता नहीं ।।

जीवन का मकसद बना पेट, में कभी किसी का भरा नही
यहाँ राम युगों से है वनवास, रावण कभी यहाँ मरा नहीं
हर कर में जाम हर घट में दाम, बस राम का कहीं पता नहीं ।।

श्यामसुन्दर शर्मा,
अधीक्षक

संसार अत्यधिक शोकपूर्ण है। फिर भी लोग इस घोर संसार-पथ में ही रत रहते हैं, आत्मा में रत नहीं होते।

- श्रीकृष्ण मिश्र

भ्रष्टाचार पर सुश्री अनुश्री शर्मा द्वारा बनाया गया कार्टून

सुपुत्री श्री श्यामसुंदर शर्मा
अधीक्षक

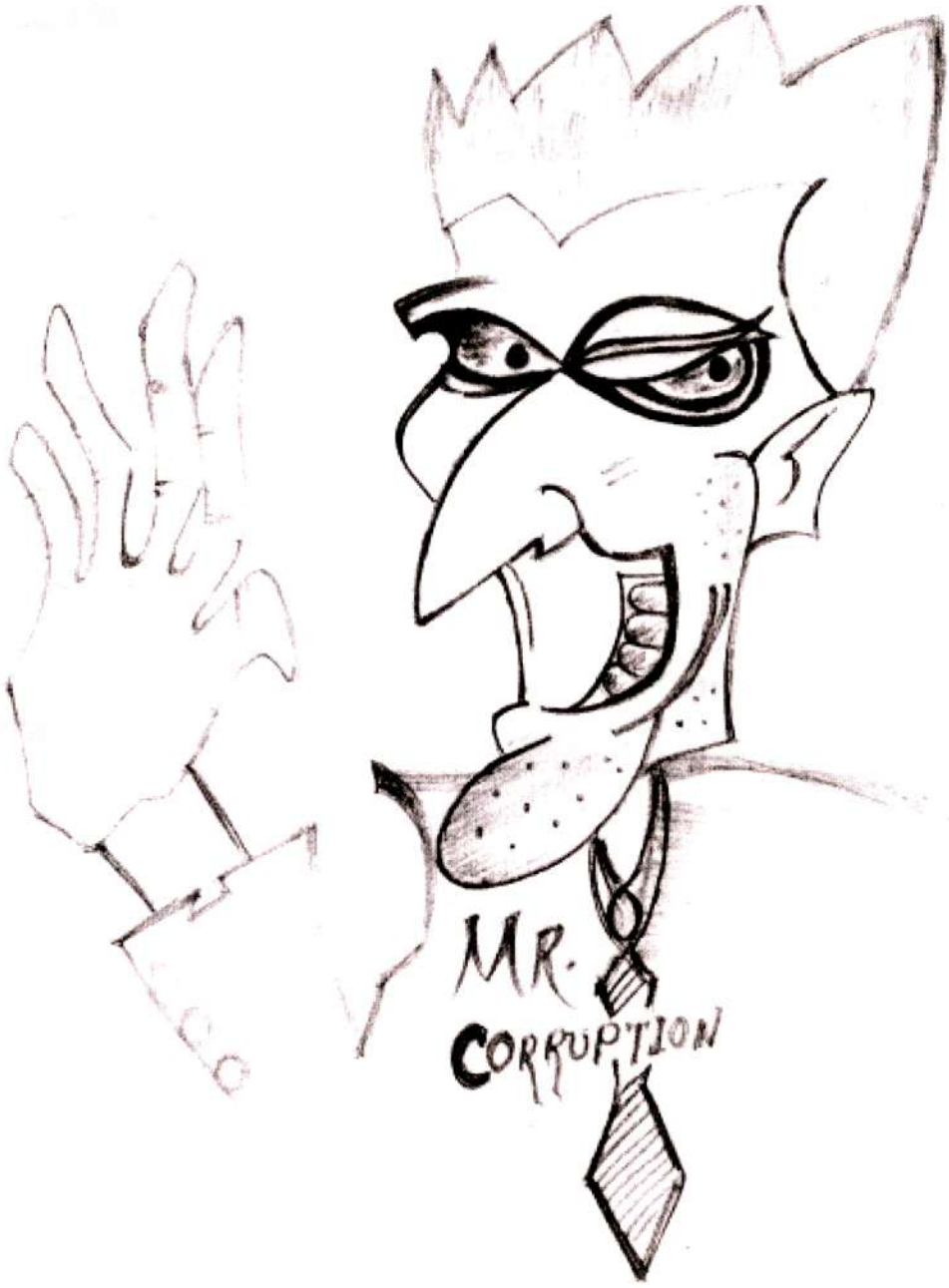

राजनीति की बात निराली

राजनीति की रीति निराली ।
राजनीति की बात निराली ।।

राजनीति का छलिया चेहरा,
जनता को छल जाता है।
कौन ऊँट किस करवट बैठे
कोई समझ न पाता है ।
आज मिलन के गीत गा रहे,
कल तक जो देते थे गाली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....

नेतागण लड़ते नूरा-कुश्ती
संसद में मचता घमासान ।
बस कुरसी की छीना-झपटी,
माननियों का उद्देश्य महान ।
"सत्यमेव जयते" के देश में,
झूठ ने गहरी जड़ें जमा ली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....

कल के दुश्मन आज दोस्त हैं,
यहाँ है बहती उलटी गंगा
माला जपते शान्ति-शान्ति की,
और गुपचुप करवाते दंगा ।
जन-मन में नफरत के बीज बो दिये,
और सत्ता की फसल उगा ली ।।.....
राजनीति की बात निराली ।।.....

सृजन नहीं, विध्वंस नीति है,
अब राजनीति में बहुत अनीति है ।
सज्जन की कोई नहीं जरुरत,
इसको तो दुर्जनों से प्रीति है ।
हर दल में कुछ सम्मानित गण हैं ।
चोर-उचक्के, गुण्डे - मवाली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....
इसके बाद टूट गया है -
नहीं उमर का इसमें चक्कर,
कोई न होता इसमें रिटायर।
काला अक्षर भैसं बराबर,
फिर भी बन बैठे हैं, मिनिस्टर।
इनकी रैली में श्रोता बनकर
भाड़े के चमचे देते ताली ।।....
राजनीति की बात निराली

अब मूल्यों की राजनीति की,
प्रीति 'मूल्य' से ही अधिक है ।
उसी पक्ष का करें समर्थन,
जिसने दी कीमत सर्वाधिक है ।
उच्च आदर्शों व नैतिकता की
अब केवल बातें हैं खाली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....

शुचिता तो विपक्ष का लक्षण,
सत्ता करती भ्रष्टों का पोषण ।
राष्ट्रभक्ति का होश किसे है।
झूठे वादे, फर्जी भाषण ।
श्वेत वस्त्रों के हैं आवरण
लेकिन करतूतें हैं काली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....

दूध-जलेबी नेतागण काटें,
जनता भूखों मरती है।
पेट्रोल है महँगा, पैदल चलिये
पैदल से सेहत बनती है ।
देश का निकल रहा दीवाला,
इनकी मनती है रोज दिवाली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....

अजब-गजब है इनकी सियासत,
मिलती कुरसी इन्हें विरासत ।
गांधी पटेल थे जिसके प्रहरी
वो राजनीति अब इनकी चेरी ।
राजनीति इक गोरखधन्धा,
बहुत बड़ी है इसकी दलाली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....

मिलने का समय नहीं इनके पास,
ये बन गये आम से खास।
जनता के दर्द का इन्हें नहीं एहसास,
काश ! वापस आ जाते नेहरु, सुभाष ।
कैसे चमन गुलजार रहेगा,
जब उसे उजाड़े खुद ही माली ।। .....
राजनीति की बात निराली ।।.....
राजनीति की रीति निराली ।।.....

शाश्वत शुक्ला
निरीक्षक

कैसा विकास

मानव ने जब किया पहिया का आविष्कार,
तो चकित हुआ यह जग-संसार,
मिलों दूर जाने के लिए करने लगा इसका व्यवहार,
मानव ने कर अपनी तरक्की बना डाली मोटरगाड़ी, कार,
अब कौन करे इंतजार,
चाहे जाना हो कितनी बार,
तेज हो गई जिन्दगी की रफ्तार,
जंगलों पर करने लगे प्रहार,
और वृक्षारोपण हुआ बेकार,
पशुओं से तोड़कर प्यार,
भूलने लगे बाघ-वनविलार,
जानवरों का करने लगे शिकार,
चाहे खूँखार हो या लाचार,
बस यहीं की मानव ने मर्यादा पार,
जंगलों का करके संहार,
कंक्रीट का जंगल कर दिया तैयार,
वाहनों का करके भरमार,
करने लगे जहरीले गैसों की बौछार,
चुपचाप प्रकृति सह रही थीं इन सबों की मार,
लेकिन उस से नहीं सहा गया इस बार,
क्योंकि अब हो रहा था दिल पर वार,
तोड़कर अपनी धैर्य की बाड़,
करने लगा नेचुरल वार (natural war)
कहीं बाढ़ तो कहीं सुखाड़,
अम्लीय वर्षा, ग्लोबल वार्मिंग,
आपदाओं की हुई लम्बी कतार,
लाखों मरे, करोड़ों बीमार,
ख़त्म हुई फसल-पैदावार,
जानलेवा बीमारियों का हुआ प्रसार,
इसमें हो गई मानव की हार,
प्रकृति लेने लगी जब प्रतिकार,
मानव ने कर विकास अपना,
खोल डाला विनाश का द्वार,
प्रकाश पाने की खातिर,
सब कुछ कर दिया अंधकार,
अब भी हो जा होशियार,
सुन लो भाई मेरी पुकार,
खूब वृक्ष लगाओ, नहीं तो वर्ष में चार,
ताकि फिर से हरा-भरा हो यह संसार।
खूब करो इस सन्देश का संचार
ताकि फिर से हरा-भरा हो यह संसार।।

चन्दन कुमार
निरीक्षक

कविता संग्रह

(अ) मेरा छोटा घर

मेरे छोटे घर में
मेरे पास थी
सिर्फ एक छत
और दिवारें चार
चीजें भी थी बस चार
घर भरा-भरा सा लगता था।
बमुश्किल ही अट पाती थी
घर की तमाम चीजें
सटी एक दूसरे से
एकदम गुत्थम-गुत्था
और हम सब भी सटे थे
थे एकदम गुत्थम-गुत्था।
मेरे छोटे घर में हमें
दिख जाते थे
एक दूसरे के आँसू
छलकने से पहले ही
हम बाँट लेते थे
हो जाते थे गम आधे।
मेरे छोटे घर में
दिख जाती थी
एक दूसरे की खुशी
तो हम नाच लेते थे
और हो जाती थी
खुशी सौ गुनी।
अब मैं बड़े घर में हूँ
घर नहीं शायद मकान में हूँ
और इस मकान में हैं
कई कमरे, कइ छतें
कई दिवारें, कई कोने
सबके अपने अपने कोने
अब मकान भरा-भरा
और घर खाली-खाली सा लगता है।

(ब) वो जिये ही नहीं

मर गये वो
जो जिये ही नहीं।

वो भ्रूण
जान लिया गया
जिनका लिंग।

वो भ्रूण
रह गये दंग
यह जानकर कि
अब पैदा होना
या ना होना
निर्धारित करेगा
उनका लिंग।

और किया निर्धारित

फिर हुआ मौन अंत
कच्चे अंगों का
कतरा-कतरा अन्त।

वो भ्रूण
नि:संदेह जीते ही
होते जग में
होते जीवन में

मर गये वो
जो जिये ही नहीं।

(स) मेरे नेत्र

मेरे बाद
किसी नेत्रहीन
को दे देना
मेरे नेत्र।
कि मेरे बाद भी
मेरे नेत्र देखें
सारे का सारा क्षेत्र
देखें सावन, देखें चैत्र।
कि मेरे बाद भी
मेरे नेत्र देखें
एक-एक चित्र
अपने और मित्र।
मै न रहा
तो न रहा
रहेंगे मेरे नेत्र
इसी जहाँ में
तुम देख लेना
इनमें मुझे
और मैं देख लूँगा
इनसे तुम्हें।
मेरे बाद
किसी नेत्रहीन
को दे देना
मेरे नेत्र।

हेमन्त कुमार शर्मा,
निरीक्षक

कविता संग्रह

(अ) मेरे वतन की मिट्टी में

मेरे वतन की मिट्टी में
शामिल वो नूर है
है जीते जुनून का जज्बा
बख्श दे वो सुबुर है

तुफानों से टकरा जाए
आँधियों से लिपटा जाए
ए दुश्मनों! ताक में रहना नहीं
मेरे वतन का बच्चा-बच्चा शूरवीर है

है दास्तांओं में दास्तां
मेरे वतन की यारो
वतन से है मोहब्बत!
ईमान की निशानी प्यारो
इस मिट्टी का कर्ज
चुकाना जरुर है

मेरे वतन की मिट्टी ....

चमक उठी बनके गाँधी
झलक नेहरु सरदार में है
भगत अश्फाक बिस्मिल राजगुरू
मेरे देश की शान है

मौत मिले तो शहीदों की मिले
और मौत ना मुझे मंजूर है
मेरे वतन की मिट्टी मे शामिल वो नूर है।

(ब) सच्चाई

अर्ज करुँ खुदा से इतनी
कायर की मौत ना पाऊँ
ना आसमान सी ऊँचाईयां
ना समुंदर सी गहराईयाँ पाऊँ
ऐ मिट्टी के मालिक
इस मिट्टी पर मिट जाऊँ
एहसान तेरा होगा खुदा मुझ पर
जो मैं शहीद कहलाऊँ

ना चाहुँ हीरे-मोती
ना फूलों का बिस्तर चाहूँ
ए मातृभूमि तेरी गोद में
चुपके से सो जाऊँ
हो बिस्मिल सी सरफरोशी की तमन्ना
अश्फाक सी अदा पाऊँ
शहीद हो जाऊँ मातृभूमि पर
कफने तिरंगा पाऊँ

एहसान तेरा होगा ....

हो राजगुरु सा हौंसला
भगत सी हिम्मत पाऊँ
ना हो मौत का मातम
''शहीद'' मैं जश्न शहीदी मनाऊँ

मैं जश्ने शहीदी मनाऊँ

एहसान तेरा होगा ....

एन. एन. पठाण
सिपाही

राजभाषा हिन्दी

राजकाज चलाने के लिये किसी न किसी राजभाषा की आवश्यकता पड़ती है। अपने समय में संस्कृत, पालि, प्राकृत राजभाषा रही हैं। वर्तमान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। 14 सितम्बर 1949 को संविधान में हिन्दी का मान्यता प्रदान की गई। तब से ही प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।

हाल में जब हिन्दी सप्ताह मनाया जा रहा था एक साथी ने पूछा कि हम गुजरात में काम करते हैं और इसे 'ख' वर्ग के क्षेत्र में माना जाता है इसका तात्पर्य क्या है? उक्त मित्र की जिज्ञासा - समाधान हेतु यह लेख प्रस्तुत है।

आजादी के बाद हिन्दी को राजभाषा के तौर पर स्थापित करने हेतु राष्ट्रपति के आदेशों, संसद की सिफारिशों और राजभाषा अधिनियम के उपबन्धों का निगमन करने हेतु भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना हुई। राजभाषा विभाग ने सन् 1976 में हिन्दी की प्रगति हेतु निम्न 12 नियम प्रस्तुत किये।

1. ये नियम केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों, केन्द्रीय सरकार के नियमों और कम्पनियों पर लागू होते हैं।
2. देश भर के केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को तीन वर्गो में बाटा गया हैं.

   'क' वर्ग के क्षेत्र - उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली- यह सारा हिन्दी क्षेत्र है।

   'ख' वर्ग के क्षेत्र - पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, चण्डीगढ़ और अण्डमान निकोबार.

   'ग' वर्ग के क्षेत्र - प.बंगाल, उड़ीसा, उत्तरपूर्वी क्षेत्र तथा दक्षिण के राज्य
3. 'क' क्षेत्र के केन्द्रीय सरकार के अथवा राज्य सरकार के किसी कार्यालय को या व्यक्ति को हिन्दी पत्र लिखें जाएँ। यदि किसी को अँग्रेजी में पत्र लिखा जाये तो उसका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाये।

   'ख' क्षेत्र के कार्यालयों को सामान्यत: हिन्दी में पत्र भेजे जायें। यदि कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाय तो हिन्दी अनुवाद अवश्य संलग्न किया जाए। यदि कोई किसी अन्य भाषा में पत्र व्यवहार चाहे तो पत्र के साथ हिन्दी अनुवाद भेजे जाएँ।

   'ग' क्षेत्र के कार्यालयों को पत्रादि अँग्रेजी में भेजे जाएँ।
4. 'क' क्षेत्र के कार्यालयों मे पत्रादि हिन्दी में भेजने का अनुपात सरकार निर्धारित करती रहेगी।
5. हिन्दी में कहीं से प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही देने होंगे।
6. सभी दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी में साथ-साथ निकाले जायेंगे और इसका उत्तरदायित्व दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का होगा।
7. कोई व्यक्ति आवेदन या अपील हिन्दी या अँग्रेजी में दे सकता है। यदि आवेदन या अपील हिन्दी में हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर हैं तब उसका उत्तर भी हिन्दी में देना होगा।
8. कोई कर्मचारी फाइल में टिप्पणी हिन्दी या अंग्रेजी में लिख सकता है। उसके दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं मांगा जायेगा। जिन कार्यालयों में 80% कर्मचारी हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर चुके हैं, वहाँ हिन्दी में नोटिंग और ड्रफ्टिंग का आदेश दिया जा सकता है।
9. जिस कर्मचारी ने मैट्रिक आदि परीक्षा में हिन्दी ली थी अथवा वह यह घोषणा करे कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, तो उसे हिन्दी में प्रवीण माना जायेगा।

10. जिस कर्मचारी ने प्राज्ञ या प्राज्ञ के समकक्ष परीक्षा पास की हो उसे हिन्दी में कार्यसाधक समझा जाएगा। ऐसे कर्मचारी 80% हो तो उस कार्यालय का नाम राजपत्र में अधिसूचित किया जायेगा।

11. केन्द्रीय सरकार के सभी मैन्युल संहिताएँ नियम, रजिस्टर, फार्म, नामपट्ट, सूचना-पट्ट, पत्रशीर्ष, लिफाफे और स्टेशनरी की पट्टे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होगी।

12. सरकारी नियमों और आदेशों का अनुपालन कराने और भाषा प्रयोग की जाँच-पड़ताल करते रहने का उत्तरदायित्व प्रत्येक कार्यालय के प्रधान का होगा।

आशीष कुमार
निरीक्षक

''बेटी बचाओ''

कलियों को खिल जाने दो,
मीठी खूश्बू फैलाने दो ।।
आधार ये हैं जिन्दगी का,
इन्हे जिन्दगी बसाने दो ।।
कलियाँ जो तोड़ी तुमने तो,
फूल कहाँ से लाओगे ?
बेटी की हत्या करके तुम
बहु कहाँ से लाओगे ?
माँ दुर्गा की पूजा करके
भक्त बड़े कहलाते हो,
माँ लक्ष्मी के उपासक बनते हो,
घर की लक्ष्मी मार गिराते हो,
सरस्वती के भक्त बने फिरते हो,
अपनी जिह्वा काट गिराते हो

सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा के पूजक हो
भक्त बड़े कहलाते हो
देवियों को जीवन पाने दो
घर आँगन ढमकाने दो
बंद करो उनकी हत्या अब
जीवन ज्योत जलाने दो

श्रीमती भाविका गुप्ता
पत्नी श्री वेदप्रकाश गुप्ता, निरीक्षक

यह स्त्री है, यह पुरुष है - यह निरर्थक बात है। वास्तव में तो सत्यपुरुषों का चरित्र ही पूजा के योग्य होता है।

- कालिदास

(हिन्दी सप्ताह 2012 के अवसर पर पुरस्कृत हिन्दी निबंध)

(क) देश में खेलों की स्थिति का आधुनिकीकरण

परिचय :-

खेल का जिक्र होते ही एक कहावत याद आती है :-

All work & no play makes jack a dull boy "

खेल हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। खेल से भाईचारे की स्थिति निर्माण होती है। पं.जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि खेल खेलना महत्वपूर्ण है ना कि हार-जीत।

भारत में खेल का इतिहास :-

अथर्व वेद में जिक्र है मेरे बायें हाथ में मेरा कर्म है और दायें हाथ में विजय का फल है। पुराणों में भी हमें खेलों के कई प्रमाण मिलते हैं।

पोलो, बैडमिन्टन, शतरंज, तास जैसे की खोज भारत में हुई थी। भारत सन् 1900 से ओलंपिक खेलों में हिस्सा ले रहा है।

सरकार द्वारा स्थापित यंत्रणा :-

खेलों के लिए भारत सरकार ने विविध स्तरों पर यंत्रणा स्थापित की है। 1927 में भारतीय ओलंपिक संघ की स्थापना की गई थी। 1982 में आयोजित IX एशियन खेलों के दौरान खेल विभाग की स्थापना की गई।

1985 में भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) की स्थापना हुई, जो एक संस्थान के रुप में है। SAI के नियंत्रण में नेताजी सुभाषचन्द्र राष्ट्रीय खेल संस्थान, पतियाला और लक्ष्मीबाई शारीरिक शिक्षण राष्ट्रीय महाविद्यालय, त्रिवेन्द्रम कार्यरत है जो खेल का शिक्षण-प्रशिक्षण करती है। सभी-खेलों के स्वतंत्र महासंघ हैं और राज्य स्तर पर खेल प्रतिकरण कार्यकरण कार्यरत है।

वर्तमान स्थिति :-

देश में खेलों की वर्तमान स्थिति में काफी सुधार हुआ है। क्रिकेट विश्वकप-2011 और लंदन ओलंपिक में 6 पदक जीतकर हमारे देश ने विश्वके नक्शे पर अपना वजूद साबित किया है।

हमारे पास आज विविध खेलों में विश्वस्तर के खिलाड़ी उपलब्ध हैं

शतरंज = विश्वनाथ आनंद

बैडमिन्टन = साइना नेहवाल

टेनिस = सानिया मिर्जा, महेश भूपति, लिएंडर पेस

बॉक्सिंग = मेरी कोम

शूटिंग = गगन नारंग, राज्यवर्धन सिंह राठौड़

कुश्ती = सुशील कुमार

बिलियड्र्स = गीत शेठी

खेल मंत्री अजय माकेन भारतीय खिलाड़ियों के मत से अब तक के सबसे पसंदीदा मंत्री हैं।

खेल मंत्रालय ने operation excellence london 2012 (ओपेक्स) के अन्तर्गत 200 करोड़ रुपये खर्च किए तब जा के भारत लंदन में 6 पदक पा सका कौमनवेल्थ खेलों में भी भारत ने 38 स्वर्णपदक प्राप्त किए थे।

वास्तविकता :-

खेलों में देशकी स्थिति का सुधार हो रहा है, पर वास्तविकता पर भी ध्यान देना जरुरी है, जो निम्न लिखित है:-

1). बजट - निधि - की कमी

2). अच्छे प्रशिक्षकों की कमी

3). बुनियादी ढाँचों की कमी

4). खेल महासंघों में भाई-भतीजावाद और लाल फीताशाही, क्रिकेट के प्रति लगाव और अन्य से अलगाव

5). प्रायोजकों की कमी

6). खेलों के प्रचार-प्रसार की कमी

7). सबसे अंतिम पर महत्वपूर्ण-जूनून की कमी

चीन, अमरिका या रशिया जैसे देशों में खेलों के प्रति जो जागरुकता, लगाव, जूनून और शौक है, उसका दसवाँ हिस्सा भी हमारे देश में नहीं है।

कुछ तथ्य और आँकड़े :-

IOA के प्रेसिडेन्ट विजय मल्होत्रा ने वित्त मंत्रालय से खेलों के लिए 4000 करोड़ रुपये की मांग की थी जब कि बजट 2012-13 में केवल 1152 करोड़ का प्रावधान किया गया।

2007 - 3670 करोड़

2010 - 3315 करोड़

2011 - 1121 करोड़

2012 - 1152 करोड़

उक्त आँकडे बता रहे हैं कि देश में उल्टी गंगा बह रही है।

विश्व के 13 देश ऐसे हैं जिसकी जनसंख्या 1 करोड़ से कम है फिर भी लंदन में उन्होंने एक स्वर्ण पदक

प्राप्त किया है। भारत ५५ वें स्थान पर रहा था ।

चीन 1984 से ओलंपिक खेलों में हिस्सा ले रहा है। चीन ने खिलाड़ियो के पीछे 15000 करोड़ रुपये खर्च किया और परिणाम यह है कि लंदन में वह दूसरे स्थान पर था।

स्थिति का आधुनिकीकरण :-

1984 में देश में खेल राष्ट्रीय नीति की घोषणा की गई थी, जिसका लक्ष्य खेलों को बढ़ावा देना था यह नीति इतनी असरदार साबित नहीं हुई थी।

राष्ट्रीय खेल विकास निधि की भी स्थापना की गई थी जिसमें किया गया योगदान आयकर में 100% मुक्त है।

2001 में नई राष्ट्रीय खेल नीति की घोषणा की गई थी, जिसका मुख्य हेतु था SAI, खेल महासंघ, राज्य एवं केन्द्र सरकार साझेदारी में खेल को बढ़ावा देने का प्रयास करें। खेलों को संविधान के समक्तीं सूचि में शामिल करने का मुद्दा भी था।

2008-09 में पंचायत युवा क्रीड़ा एवं खेल अभियान (PYKKA) द्वारा योजना जारी की गई थी जिसका मुख्य हेतु गाँव में खेलों को और खिलाड़ियों को बढ़ावा देना था। इसी तरह विशेष विस्तार खेल (SAG) योजना के तहत बिहार के ग्रामीण खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया गया था जिसमें राष्ट्रीय स्तर के तीरंदाज तैयार हुए थे।

2010-11 में Assistance for creation of sports योजना जारी की गई है, जिसके अन्तर्गत शहरी विस्तार में युवाओं को खेलों को प्रति जागरुक करना एवं प्रशिक्षण देना है।

खेलमंत्री अजय माकेन, लोकसभा में राष्ट्रीय खेल विकास बिल 2011 को पारित करवाने में, काफी हद तक प्रयत्न शील हैं। यह एक सीमा चिन्हरुप बिल है जिससे देश में खेलों की स्थिति की कायापलट हो सकती है।

अजय माकेन ने हाल ही में साक्षात्कार में कहा था कि खेलों को बढ़ावा देने के राष्ट्रीय खेल विज्ञान संस्थान की स्थापना विचाराधीन है जो विश्वस्तर की होगी और जिनसे वैज्ञानिक तरीके से खिलाड़ीयों को प्रशिक्षित किया जायेगा।

हौशला बुलंदी :-

खेलमंत्री ने घोषणा की थी कि लंदन में हिस्सा लेने वालों को SAI में ग्रुप-बी और पदक जीतने वालों को ग्रुप-ए अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया जायेगा।

स्पाईस जेट ने एलान किया है कि लंदन में जीते खिलाड़ियों को ता-उम्र स्पाईसजेट नि:शुल्क विमानी सेवा देगा।

सहारा इन्डिया परिवार ने लंदन में रजत पदक जीतने वालों को तीन किलो और काँस्य पदक जीतने वालों को दो किलो सोने का पदक देने का एलान किया है।

आधुनिकीकरण के सुझाव :-

खेलों की स्थिति का आधुनिकीकरण करने के लिए निम्नलिखित सुझाव विचारणीय हैं :-

1.बजट - निधि की बढ़ोतरी

2.प्रशिक्षकों की विदेशो में कड़ा प्रशिक्षण

3.वैज्ञानिक तरीकों से अभ्यास

4.संसाधनों की खरीदी/आयात

5.विज्ञापनों द्वारा जागरुकता

6.कृत्रिम मैदानों की रचना

7.अच्छे और आधुनिकतम संस्थानों की स्थापना

8.प्रायोजकों को आयकार

सरकार के अलावा पूर्व-खिलाड़ी एवं उद्योग गृहों द्वारा स्थापित संस्थान भी खेलों को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है जो सराहनीय है।

ओलंपिक गोल्ड क्वेस्ट (OGQ) की स्थापना गीत शेठी एवं प्रकाश पदुकोण ने की है। मित्तल चैम्पियन ट्रस्ट की स्थापना लक्ष्मी मित्तल ने की है । जिसका संचालन मनीषा मल्होत्रा कर रही है। यह सभी-लोग अपने से यथाशक्ति खलों को बढ़ावा दे रहे हैं।

आर्थिक विकास के मामले में हमारी तुलना चीन से होती है पर खेलों के मामले में हम चीन से बहुत पीछे है। यहाँ हमें चीन-की नकल करनी चाहिए।

कौमनवेल्थ खेलों में मूलभूत ढाँचों पर हमने

55398 करोड़ रुपये खर्च किये थे पर प्रशिक्षण के पीछे सिर्फ 638 करोड़ ही खर्च किया था। ऐसी कई बातें हैं जो हमारी स्थिति के सुधार में रोड़ा डाले हुए है।

संकलन :-

किसी भी देश का खलों के प्रतिलगाव इसी बात से मालूम होता है उसकी खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने में कितनी तैयारी है और खिलाड़ी मानसिक रुप से कितने तैयार हैं।

OGQ और MCT रियो में 2016 ने रियो में होनेवाले खलों के लिए तैयारी अभी से शुरु कर दी है। हम यह आशा रखते हैं कि भारतीय खेल महासंघ लाल फीताशाही एवं भाई-भतीजावाद से निजात पा कर खेलों के लिए सही अर्थ में काम करेंगे। हमें आशा है राष्ट्रीय खेल विकास बिल 2011 के वाहित होने पर भारतीय खेल जगत में एक नया अध्याय शुरु होगा।

वो सुबह कभी तो आएगी!!

चक दे इन्डिया!!

जयेश आर. छींकनीवाला

अधीक्षक

(ख) आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति

नवभारत टाइम्स - 13 जुलाई, 2012 पृष्ठ -1- भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष के अगले मिशन के लिए फिर से चुनी गयी।

पृष्ठ -2- आसाम में 20 वर्षीय युवती के साथ भीड़ ने की छेड़-छाड़ सरेआम की बेइज्जत।

एक दिन में, एक ही अखबार के पृष्ठ पर दो ऐसी खबर जिसमें से एक को पढ़कर हम को महसूस होता है कि आधुनिक युग में महिलाएँ चाँद तक पहुच गयी हैं, तो अन्य दूसरी खबर पढ़कर लगता है कि आधुनिक युग में महिलाओ की स्थिति बद से बदतर हो गयी है।

आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति के बारे में कोई भी एक राय देना अत्यन्त जटिल कार्य है। जहाँ एक ओर महिलाएँ देश के लिए ओलम्पिक जैसी प्रतियोगिताओं में सोने-चांदी के मेडल ला रही हैं, वहीं दूसरी ओर लोभी पुरुष सोने-चांदी के लिए महिलाओं का गला रेत रहे हैं। आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति का पता तभी लगाया जा सकता है, जब हम इसकी तुलना प्राचीन युग से करे। भारत के संबंध मे चर्चा करें तो कुछ अपवादों को छोड़ कर ना महिलाओं की स्थिति प्राचीन युग में अच्छी थी और ना ही आधुनिक युग में। हालाकि, उस समय - यंत्र नार्यस्तु पूज्मते - जैसी कहावत या काव्यांश प्रचलित थे, लेकिन नारी थी केवल भोग की ही वस्तु। एक राजा के 50-60 रानियां इसका जिवंत उदाहरण हैं।

आधुनिक युग में प्राचीन समय की तुलना में कुछ सुधार अवश्य हुए हैं, यथा महिला में शिक्षण का प्रसार हुआ है महिलाएँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देने लगी है। देशाध्यक्ष के पद पर भी कार्य अनछुए क्षेत्र में आपना नाम रोशन कर रही हैं, लेकिन ये सब एक निश्चित तबके तक ही सीमित है। आज भी महिलाओं को देहज के लिए जलाया जाता है आज भी महिलाओं का सामूहिक चिर-हरण किया जाता है। आज महिलाओं के साथ होने वाली दुराचार की घटनाओं में कोई कमी नहीं आई बल्कि आँकड़ों पर नजर डाले तो यह दिन-प्रति दिन ऊपर ही चढ़ता नजर आ रहा है। शायद ही कोई दिन ऐसा निकलता हो जिस दिन अखबार की खबर बिना बलात्कार या अपहरण के हो।

आधुनिक युग में महिलाओं को हम तीन स्तरों पर परिभाषित कर सकते हैं - आज के समय महिलाओं का ऐसा समूह है जो स्वतंत्रता समानता, शिक्षा, आगे बढ़ने का पूरा महौल आदि का भरपूर उपभोग कर रहा है। अँग्रेजी भाषा ऐसी महिलाओं को हम 'ईलिट ग्रुप' कह सकते है।

दूसरा समूह उन महिलाओं का है जो पढ़ी-लिखी हैं, नौकरी भी करती हैं, लेकिन असुरक्षा का भय उनको हमेंशा सताता रहता है। वो ना कार्यालय में सुरक्षित है और ना ही अपने घर में। उनको हर समय यह, लगता रहता है कि कब उन पर हमला हो जाएं? वो ना रात के समय अकेली बाहर जा सकती हैं और ना ही अपनी मर्जी से कोई कदम उठा सकती हैं। उनको हर कदम पर किसी पुरुष के साथ की आवश्यकता होती है। वो जब कार्यालय जाती हैं तो भी उनके साथ कोई पुरुष होता है ताकि वो अपने आप को सुरक्षित समझ सके। इनमें

अपने सहकर्मी के प्रति ऐसा संशय हमेंशा मन में रहता हैं कि कब कौन उनका फायदा उठा ले। उनको कार्यालयों में मिलने वाली हर रियायत के ऐवज में बहुत कुछ गँवाना पड़ता है।

तीसरा तबका उन महिलाओं का है जिनसे शिक्षा, जागृति, आधुनिकीकरण कोसों दूर है। ये केवल यंत्र की भाँति होती है जिसके जीवन का ध्येय पुरुष के जीवन को बेहतर बनाना होता है सबसे दयनीय शोषित कुपोषित यह वर्ग केवल गृह कार्य और यौन सुख के लिए उपयुक्त समझा जाता है।

आधुनिक युग में अगर हम महिलाओं की स्थिति का अवलोकन करते हैं तो हमें इन तीनों स्तरों पर विचार करना होगा। पहला वर्ग अर्थात् 'ईलिट ग्रुप' की संख्या नगण्य है - ये वे महिलाएँ है जो या तो जन्म से अमीर परिवारों में पैदा हुई हैं या अपनी कड़ी मेहनत से उन्होंने बहुत बड़ा प्रशासनिक पद हासिल कर लिया हैं। दूसरे वर्ग-अर्थात् मध्यम कामकाजी महिलायों की संख्या भी बहुत कम है - ये वो महिलाएँ है, जो छोटी मोटी सरकारी या निजी क्षेत्र में कार्यरत हैं। असली समस्या हैं तीसरे तबके की महिलाओं की ये

''नारी बेचारी है,
पुस्यों की मारी है,
तन से बिधित है
मन से मुदित है.

और केवल क्ति है, क्ति है, क्ति है ...'' इन्हीं महिलाओं के लिए महान कवि निराला की पंक्तियाँ हैं -

''नारी जीवन हाय तेरी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आखों में पानी''

इन महिलाओं का जीवन यंत्ररुप है जो घर का काम करने वाली और बच्चे पैदा करने वाली मशीन के रुप में देखी जाती है। इनकी कोई इच्छा नहीं सुनी जाती,-

ये अपने मन से कोई कदम नहीं उठा सकती ये वह वर्ग है, जिस पर कोई कार्य करने के लिए आगे बढ़ाने के लिए तैयार नहीं । पुरुषों के मन में यह भय है कि अगर यह वर्ग आगे बढ़ गया तो उनका जीना दुश्वार हो जायेगा। पूरे विश्व में इन महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। विश्व के प्रत्येक देश में इस तरह की महिलाओं की संख्या सर्वधिक है - जो केवल उपयोग की वस्तु मात्र है। ये आधुनिकीकरण से कोसों दूर हैं।

समाज में आधुनिकीरण आने से हालाँकि महिलाओं की स्थिति में पहले से काफी सुधार आया है, लेकिन यह सुधार पर्याप्त नहीं है। जब तक तीसरे वर्ग की महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता महिलाओं की स्थिति को अच्छा कहना बेमानी होगा। इसके लिए हर देश की सरकार को कड़े कदम उठाने होंगे उन्हें महिला शिक्षा अनिवार्य करनी होगी और जिस घर में महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जा रहा उनके लिए सख्त सजा निर्धारित करनी होगी।

तथा कथित आधुनिक महिलाएँ व्जो अर्द्धवस्त्र धारण कर अपने आप को आधुनिक साबित करने की

कोशिश कर रही हैं उनको ये समझना होगा कि केवल पुरुष मनोरंजन का साधन बन कर वे आधुनिक नहीं कहला सकती इसके लिए उन्हें विचारों में आधुनिकता लानी होगी। अपनी बहनों जो सालों से शोषित हैं उनको आगे बढ़ाना होगा। कवि ने महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने वाली बेहद खुबसूरत पंक्ति कही है।

''एक स्वप्न से शुरुआत,
आओ मिल करे सब बात.
जीवन रहे ना रहे,
जीवन बदलने का स्वप्न हो साकार''

नारी जितनी कोमल है, उतनी ही मजबूत भी और इसके प्रमाण इतिहास में भरे पड़े हैं लेकिन समस्या यह है कि पुरुषवादी समाज में उनको यह महसूस ही नहीं होने दिया जाता कि उनमें ताकत है, वो कुछ कर सकती हैं। जहाँ-जहाँ मौका मिला है, महिलाओं ने साबित किया है, कि वो पुरुषों से किसी मामले मे कम नही है। कल आधुनिक रचयिता की पंक्ति याद आ रही है :-

नारी दहेज नहीं ला सकती क्योंकि
वो तो देश के लिए मेडल लाती हैं।

हेमन्त कुमार शर्मा
निरीक्षक

(ग) आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति

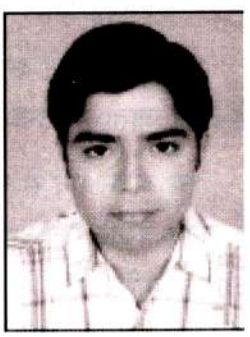

पितृसत्तात्मक समाज में नारी हंमेशा से पुरुषों की गुलाम एवं सामाजिक रुप से प्रताड़ित होती रही हैं। नारी ही एकमात्र ऐसी जाति है जो आज तक कई वर्षों से पराधीन है। प्राचीन काल से लेकर आजतक महिलाओं का प्रत्येक कदम घर से लेकर बाहर तक शोषित होता रहा है। समाज में व्याप्त कुप्रथाओं जैसे पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बहुपत्नी विवाद, विधवा विवाह निषेध, कन्या का जन्म लेना दुर्भाग्यपूर्णमाना जाना एवं उन्नति और विकास के आधारों से वंचित रखा जाना आदि माध्यमों से महिलाओं का शोषण होता आ रहा है।

आज भारत भले ही साक्षरता, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अन्य क्षेत्रों मे नित्त विकास के ये पायदान पर चढ़ रहा हो फिर भी यह जाति-द्वेष, धार्मिक-कट्टरता, सामन्ती-सामाजिक मूल्यों से जर्जरित है। इसी कारण आज भी महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। समाज में व्याप्त दहेज जैसी कुप्रथा के कारण आज भी हमें महिलाओं के आत्मदाह एवं मृत्यु के समाचार मिलते रहते हैं। दहेज के नाम पर महिलाओं को शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ दी जाती हैं, इतना ही नहीं उन्हें मार भी दिया जाता है या आत्महत्या के लिए विवश कर दिया जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं के साथ भेदभाव गर्भावस्था से ही आरंभ हो जाता हैं। लिंग परीक्षण के बाद कन्या भ्रूण की हत्या गर्भ में ही कर दी जाती हे और अगर जन्म भी लेती है तो जन्म के साथ ही उसकी उपेक्षा शुरु हो जाती है। किशोरावस्था तक उसे बचा खुचा या कुपोषित भोजन दिया जाता है, बढ़ती उम्र के साथ उससे अधिकाधिक शारीरिक श्रम कराया जाता है, मानसिक यातनाएँ दी जाती हैं। माँ बनने के बाद भी उनकी स्थिति प्राय:जस की तस ही रहती है। भारत में मौजूद कड़े लिंग परीक्षण विरोधी कानून के बावजूद प्रत्येक वर्ष दस लाख बच्चियाँ यहाँ अपना प्रथम जन्म दिन भी नहीं देख पाती हैं। प्रति वर्ष 5 लाख महिलाएँ अवैध रुप से गर्भपात कराती हैं। 1901 ई.के आँकड़ों के अनुसार भारत में लिंगनुपात 972 महिला एवं 1000 पुरुष था जो 2011 ई.में घटकर 940 महिला एवं 1000 पुरुष ही रह गया है जो महिलाओं की गिरती जनांकीकिय स्थिति की ओर संकेत करता है।

लगभग सभी समाजों में देखभाल एवं सेवा-सुश्रुषा का दायित्व बिना मानदेय महिलाओं को सौंप दिया जाता हैं। कार्यस्थल पर भी यह भेदभाव महिलाओं का पीछा नहीं छोड़ती। कुछ संगठित क्षेत्रों को छोड़ प्राय:सभी क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों से अधिक काम करना पड़ता है जबकि वेतन के रुप में उन्हें पुरुषों से कम भुगतान किया जाता हैं। भारत में महिलाएँ पुरुषों की तुलना में प्रति सप्ताह 12 घंटे अधिक काम करती है। काम के बोझ की यह असमानता उन महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक है जिनका सामना उन्हें अपने पसंदीदा अवसर चुनने में करना पड़ता हैं।

वर्तमान समय में भारतीय समाज महिलाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने में भी उनके साथ भेदभाव करता है। किसी सामान्य गरीब परिवार का लड़का जो अच्छे विद्यालयों में पढ़ता है फिर घर में आराम से पढ़ाई कर पाता है वहीं लड़की जो स्कूल से आने के बाद या घर पर ही रहकर ना केवल अपने माँ के कामों में हाथ बँटाती है बल्कि रोजी-रोटी कमाने में अपने पिता का भी सहयोग करती हैं। अध्ययन के क्षेत्र में बालिकाओं की इसी उपेक्षा के कारण आज भी महिलाओं का शैक्षणिक स्तर काफी निम्न हैं। 2011 के जनगणना आँकड़ों के अनुसार भारत में 82.14 प्रतिशत पुरुष एवं 65.46 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं जो महिलाओं के शिक्षा पर जोर डालने की जरुरत पर बल देता हैं।

किसी सामान्य गरीब परिवार में लड़कों को तो पर्याप्त एवं सुपोषित भोजन दिया जाता है वहीं दूसरी ओर घर के कामों में एवं अन्य आजीविका प्राप्त करने के कार्यों में महती भूमिका निभाने वाली लड़की को उसके जीवन के चारों अवस्थाओं शैशवास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं प्रजनन काल में भी बचा-खुचा एवं कुपोषित भोजन ही दिया जाता हैं। प्रजनन काल में महिलाओं की उपेक्षा के कारण ही भारत में गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक महिलाएँ काल-कवलित हो जाती हैं। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं की मृत्यु के मामले में भारत का विश्व में दूसरा स्थान हैं। यहां 80 प्रतिशत महिलाएँ रक्ताल्पता की शिकार हैं। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में आज भी महिलाएँ समय पूर्व ही काल का ग्रास बन जाती हैं।

भले ही आज भारतीय महिला जगत के आकाश में कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी, प्रसिद्ध उद्योगपति किरण मजुमदार शॉ, फैशन डिजाइनर रितु कुमार, अभिनेत्री ऐश्वर्या राय आदि महिलाएँ चमक रही

हों लेकिन कुछ चंद महिलाओं के बल पर पूरे भारतीय महिला समाज को नहीं आँका जा सकता। देश की अधिकांश महिलाएँ आज भी सामाजिक कुरीतियों के अँधियारे में प्रताड़ित की जाती हैं। गाँवो में आज भी महिलाओं को 'डायन' या 'बुरी आत्मा' कहकर प्रताड़ित किया जाता है। शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ दी जाती हैं। यह गहरे असंतोष का विषय है कि आज भी भारतीय समाज में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, डायन प्रथा आदि कुरीतियाँ मौजूद हैं जो स्त्रियों के समुचित विकास के मार्ग का बड़ा अवरोधक हैं।

सन् 2001 ई.को महिला सशक्तिकरण वर्ष के रुप में मनाया गया। प्रत्येक वर्ष 08 मार्च को महिला दिवस के रुप मनाया जाता है। महिलाओं को समानता के आधार पर मानवाधिकारों का उपयोग एवं उपभोग सुनिश्चित करने के लिए उनके विकास एवं प्रगति को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिसका कुछ सकारात्मक परिणाम भी मिल रहा है लेकिन वास्तविक लक्ष्यतक पहुँचने में अब भी सच्चे एवं सार्थक प्रयत्न की आवश्यकता हे।

महिलाओं की वर्त्तमान स्थिति जो दुखद है, को दूर करने एवं महिलाओं को और अधिक सशक्त बनाने के लिए सरकार को ऐसा वातावरण तय करना चाहिए कि :-

(1) महिलाएँ भयमुक्त होकर, अपना सम्मान खोए बगैर जिस लक्ष्य को पाना चाहती है, का प्रयास कर सके।

(2) उसे संचार का अधिकार हो, उसे सुरक्षा मिले।

(3) आर्थिक निर्भरता समाप्त करने के लिए उसके पास पर्याप्त साधन हों।

(4) उसे अपनी योग्यता के विकास का पूर्ण अवसर मिल सके।

(5) देश की प्रगति एवं गौरव के लिए वह अपना अधिकाधिक योगदान कर सके।

(6) महिलाओं के सुझावों, विचारों को परिवार या समाज ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर महत्व मिले।

(7) समाज रुपी रथ के दो पहियों के रुप में सशक्त पुरुष के साथ महिलाओं को भी सशक्त बनाने के प्रयास किये जाएं।

अंतत: महिलाओं की वर्त्तमान स्थिति को सशक्त करने की जरूरत है, महिला सशक्तिकरण वर्त्तमान समय की मांग है, वर्त्तमान महिलाओं का भी यही संकल्प है कि :-

''मैं बेहिसाब निर्बाध बाँहें फैलाऊँगी,
मैं भीड़ होकर नहीं, मनुष्य होकर,
जीना जाहती हूँ,
खुली हवा में, एक-एक साँस लेकर''.

विकास कुमार गुप्ता
कर सहायक

हिन्दी सप्ताह - 2012 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले रहे अधिकारी / कर्मचारीगण (झलकियाँ)

सीमा शुल्क दिवस महोत्सव 2013
की (झलकियाँ)

सीमा शुल्क दिवस महोत्सव 2013
की (झलकियाँ)

बलात्कार की सजा

दिल्ली के आंदोलन ने कई प्रश्न उठाए हैं जिनमें बलात्कार के लिए 'फाँसी' की सज़ा का सवाल सबसे बड़ा है। सरकार ने अध्यादेश लाकर संशोधन करने का आश्वासन दे दिया है जो निस्संदेह आंदोलनकारी युवाओं की बड़ी जीत है। जिस सवाल को संसद दशकों से विचार के नाम पर टालती रही हो, उसे समाज 7 दिनों में हासिल कर ले तो यह छोटी बात नहीं है।

मेरी निजी राय भी यही है कि बलात्कार के दुर्लभतम मामलों (Rarest cases) में फाँसी की सज़ा का प्रावधान होना चाहिए। मसलन, कोई आदमी, जो मनोरोगी नही है, अगर 6 महीने या 1 साल की बच्ची से बलात्कार करता है, तो उसे जीने का हक़ नहीं मिलना चाहिए। आखिर किस परिस्थिति के आलोक में इस कृत्य को 'जस्टिफाई' किया जा सकता है? इसी तरह, अगर 6-7 लोग सुनियोजित तरीके से एक अकेली लड़की का अपहरण करें, उसका बलात्कार करें, उसे लोहे की छड़ से मार-मार कर अधमरा कर दें, अप्राकृतिक तरीके से न केवल यौन-क्रिया करें बल्कि शरीर को नोच-नोच कर आँतें ध्वस्त कर दें, उसे हमेंशा के लिए साधारण जिंदगी से वंचित कर दें तो इस अपराध को कैसे हल्का और क्षम्य मान लिया जाए? इसे सिर्फ़ उनकी परिस्थितियों का दोष कहकर कैसे टाल दिया जाए?

क्या ऐसे वहशियों को समाज में रखना उचित होगा? क्या ज़रुरी है कि लड़कियाँ खौफ में जियें कि ऐसे लोग जेल से बाहर घूम रहे हैं और अगला नंबर उनका हो सकता है। 'सुज़ान ऐस्त्रिक' (Susan Estrich) ने अपनी प्रसिद्ध किताब 'रियल रेप' में जिक्र किया है कि बलात्कार की शिकार वे महिलाएँ भी हैं जो भले ही कभी इस दुर्घटना से न गुज़रें, पर जिन्हें हर क्षण इस खौफ में जीना पड़ता है कि उनके साथ भी ऐसा हो सकता है। भूलना नहीं चाहिए कि मानवाधिकारों पर हमारा दावा तभी बनता है जब हम मानव होने का कर्तव्य भी निभाएँ।

इसलिए, इस आंदोलन के दबाव में अगर सरकार अध्यादेश लाकर बलात्कार के दुर्लभ मामलों के लिए फाँसी की सज़ा का प्रावधान करती है (और समय रहते संसद उस पर अपनी मुहर लगा देती है) तो भी इसका लाभ आगामी मामलों में मिलेगा, इस मामलों में नहीं। तब भी, अगर पीड़िता का दर्द इतना बड़ा परिवर्तन कराने की वजह बन जाए तो शायद उसकी टीस काफ़ी काम हो जाएगी।

लोकेश कुमार
निरीक्षक

शंको के मूल में श्रद्धा का अभाव रहता है।

- महात्मा गांधी

चुटकूला संग्रह

पहला भूत : कैसे मरा?

दूसरा भूत : ज्यादा ठंड से, और तू?

पहला भूत : पत्नी पर शक था, पूरा घर ढूँढ़ा कोई नहीं मिला।
इसलिए मैंने शर्म के मारे खुदखुशी कर ली।

दूसरा भूत : फ्रिज खोलकर देखता तो आज हम दोनों भूत नहीं होते।

⌘⌘⌘

नाई ने बाल काटते समय एक पार्टी के नेता से पूछा...

साहब, यह स्विस बैंक वाला क्या लफ़ड़ा है?

नेता चिल्लाते हुए..तू बाल काट रहा है या इन्क्वायरी कर रहा है...

नाई बोला: सॉरी...।

अगली बार नाई ने फिर एक दूसरे नेता से पूछा...

सर, यह काला धन क्या होता है...

⌘⌘⌘

नेता चिल्लाते हुए: तुम हम से यह सवाल क्यों पूछ रहे हो?

अगले दिन नाई दुकान खोलने गया तो उसके पहले ही वहां सी बी आई की टीम पहुँच चुकी थी...

सी बी आई; नाई से: तुम बाबा रामदेव या अन्ना के एजेंट हो...

नाई बोला: नहीं साहब...

सी बी आई: फिर तुम बाल काटते वक्त नेताओं से फालतू के सवाल क्यों करते हो?

नाई बोला: साहब ना जाने क्यों, स्विस बैंक और काले धन के नाम पर इन नेताओं के
बाल ख़ड़े हो जाते हैं और मुझे बाल काटने में आसानी हो जाती है...!!!

⌘⌘⌘

टीचर अपने प्रिय स्टूडेंट पप्पु से पूछती है...

जिस आदमी के दोनों हाथ न हो, उसे हिंदी और इंग्लिश में क्या कहेंगे...?

पप्पू: हिंदी में ठाकुर और...

इंग्लिश में हैंड्स फ्री...!!!

⌘⌘⌘

अध्यापक-ए बी सी सुनाओ.

चिंटु-ए बी सी

टीचर - और सुनाओ, सब ठीक-ठाक है,

चिंटू- और अल्लाह का शुक्र है, सर जी आप सुनाओ..???

⌘⌘⌘

संता के घर एक बिल्ली रहती थी जिससे वह बहुत परेशान था। एक दिन संता उससे तंग आकर कहीं छोड़कर आ गया पर संता के घर पहुँचने से पहले बिल्ली पहुँच गई।

संता दोबारा उसको बाहर छोड़कर आया पर वह फिर से घर पर वापस आ गई। संता को बहुत गुस्सा आ गया और इस बार उसने बिल्ली को बहुत दूर छोड़ दिया। फिर थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को फोन किया और पूछा कि क्या बिल्ली घर आ गई है।

बीवी - हाँ, वह पहुंच गई है।

संता - उससे बोल मुझे आकर ले जाए, मै रास्ता भूल गया हूँ।

⌘⌘⌘

जंगल में एक चीता बीड़ी पी रहा था। तभी एक चूहा वहाँ पर आया और बोला भाई, नशा करना छोड़ दो। आओ मेरे साथ और देखो जंगल कितना सुन्दर है।

चीते ने बीड़ी फेंक दी और चूहे के पीछे चल दिया। आगे चलकर एक हाथी मिला जो कोकीन ले रहा था। चूहे ने हाथी से कहा भाई, नशा करना बुरी बात है। आओ मैं तुम्हे दिखाता हूँ कि हमारा जंगल कितना सुन्दर है। हाथी भी कोकीन फेंक कर चूहे के पीछे-पीछे चल दिया।

आगे चले तो देखा एक शेर व्हिस्की का पेग पीने जा रहा है। चूहे ने शेर को भी ज्ञान दिया। चूहे की बात सुनकर शेर ने पेग रखा। फिर उस को चार-पाँच चाँटे जड़ दिए।

हाथी को गुस्सा आ गया क्यों मारा उसे? शेर ने कहा इस साले ने कल भी भाँग पीकर मुझे 3 घंटे जंगल में घुमाया था।

शैलेश कुमार शर्मा
आशुलिपिक ग्रेड - II

(हिन्दी सप्ताह-2012 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम)

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	स्थान	राशि (रु.)
01.	श्याम सुन्दर शर्मा, अधीक्षक	प्रथम	2000 = 00
02.	आशीष कुमार जैन, अधीक्षक	द्वितीय	1500= 00
03.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	तृतीय	1250= 00
04.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	सांत्वना	1000= 00

हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	स्थान	राशि (रु.)
01.	हेमन्त कुमार शर्मा, निरीक्षक	प्रथम	2000= 00
02.	श्याम सुन्दर शर्मा, अधीक्षक	द्वितीय	1500= 00
03.	जीतेन्द्र दवे, निरीक्षक	तृतीय	1250= 00
04.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	सांत्वना	1000= 00

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	स्थान	राशि (रु.)
01.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	प्रथम	2000= 00
02.	हेमन्त कुमार शर्मा, निरीक्षक	द्वितीय	1500= 00
03.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	तृतीय	1250= 00
04.	मनोजकुमार सिंह, निरीक्षक	सांत्वना	1000= 00

पप्पू: हिंदी में ठाकुर और...

इंग्लिश में हैंड्स फ्री...!!!

⌘⌘⌘

अध्यापक-ए बी सी सुनाओ.

चिंटु-ए बी सी

टीचर - और सुनाओ, सब ठीक-ठाक है,

चिंटू- और अल्लाह का शुक्र है, सर जी आप सुनाओ..???

⌘⌘⌘

संता के घर एक बिल्ली रहती थी जिससे वह बहुत परेशान था। एक दिन संता उससे तंग आकर कहीं छोड़कर आ गया पर संता के घर पहुँचने से पहले बिल्ली पहुँच गई।

संता दोबारा उसको बाहर छोड़कर आया पर वह फिर से घर पर वापस आ गई। संता को बहुत गुस्सा आ गया और इस बार उसने बिल्ली को बहुत दूर छोड़ दिया। फिर थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को फोन किया और पूछा कि क्या बिल्ली घर आ गई है।

बीवी - हाँ, वह पहुंच गई है।

संता - उससे बोल मुझे आकर ले जाए, मै रास्ता भूल गया हूँ।

⌘⌘⌘

जंगल में एक चीता बीड़ी पी रहा था। तभी एक चूहा वहाँ पर आया और बोला भाई, नशा करना छोड़ दो। आओ मेरे साथ और देखो जंगल कितना सुन्दर है।

चीते ने बीड़ी फेंक दी और चूहे के पीछे चल दिया। आगे चलकर एक हाथी मिला जो कोकीन ले रहा था। चूहे ने हाथी से कहा भाई, नशा करना बुरी बात है। आओ मैं तुम्हे दिखाता हूँ कि हमारा जंगल कितना सुन्दर है। हाथी भी कोकीन फेंक कर चूहे के पीछे-पीछे चल दिया।

आगे चले तो देखा एक शेर व्हिस्की का पेग पीने जा रहा है। चूहे ने शेर को भी ज्ञान दिया। चूहे की बात सुनकर शेर ने पेग रखा। फिर उस को चार-पाँच चाँटे जड़ दिए।

हाथी को गुस्सा आ गया क्यों मारा उसे? शेर ने कहा इस साले ने कल भी भाँग पीकर मुझे 3 घंटे जंगल में घुमाया था।

शैलेश कुमार शर्मा
आशुलिपिक ग्रेड - II

(हिन्दी सप्ताह-2012 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम)

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	स्थान	राशि (रु.)
01.	श्याम सुन्दर शर्मा, अधीक्षक	प्रथम	2000 = 00
02.	आशीष कुमार जैन, अधीक्षक	द्वितीय	1500= 00
03.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	तृतीय	1250= 00
04.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	सांत्वना	1000= 00

हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	स्थान	राशि (रु.)
01.	हेमन्त कुमार शर्मा, निरीक्षक	प्रथम	2000= 00
02.	श्याम सुन्दर शर्मा, अधीक्षक	द्वितीय	1500= 00
03.	जीतेन्द्र दवे, निरीक्षक	तृतीय	1250= 00
04.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	सांत्वना	1000= 00

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	स्थान	राशि (रु.)
01.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	प्रथम	2000= 00
02.	हेमन्त कुमार शर्मा, निरीक्षक	द्वितीय	1500= 00
03.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	तृतीय	1250= 00
04.	मनोजकुमार सिंह, निरीक्षक	सांत्वना	1000= 00

कविताएँ

(क) स्वप्न का अंत

१. सपनों में जीते हो
सपनों में मरते हो
सपनों का अंत नहीं होता।

२. वाहों में कंचन-तन हो
आँखों में स्वप्न-हिरण हो
साज पर बैठकर होकर
उदास उँगलिया फिराते हो
पर बिन भीगे आँचल आँसू से
कोई रसवंत नहीं होता।

३. सोने से अपने दाँत जड़ो
या फिर ''वेदो'' के मंत्र पढ़ो
चाहे करो नित उठकर
केशों को कृष्ण अपने
जो रोके उम्र के आने को
ऐसा बलवंत नहीं होता।

४. साधू भी कहाँ अकेले हैं
साधिका हैं या फिर चेले हैं
एकांत साधने का ढ़ोंग स्वाते है
फिरते हो लेके झमेले हैं
जिसमानी मन के मरे बिना
कोई भी संत नहीं होता।

५. सपनों मे जीते हैं
सपनों मे मरते है
सपनों का अंत नहीं होता।

(ख) कन्या

भोर की किरणें है कन्या,
जीवन का आधार है कन्या
परियों का स्वरूप है कन्या
सर्दियों की धूप है कन्या
पंछियों का कलरव है कन्या
संगीत का सरगम है कन्या
फूलों की बगिया हैं कन्या
बहती हुई नदियाँ है कन्या
सुख शांति का भंडार है कन्या
घर-घर के आँगन की संकार है कन्या ।

वेदप्रकाश गुप्ता
निरीक्षक

सार्वजनिक खरीदक्रम में पारदर्शिता द्वारा भ्रष्टाचार मुक्त भारत

" सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है। यह लघु विकास कोष के उचित प्रभावी ढंग से क्रिया-वचन का सशम्त माध्यम है।"

उक्त पंक्तियो संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने हाल में ही 'सार्वजनिक खरीद' पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी एख रिपोर्ट के आमुख के तोर पर कही थी। इस रिर्पेट में समकालीन विश्व के विभिन्न देशों में सार्वजनिक खरीद के लिये अपनायी जाने वाली प्रक्रियाओं को वर्णन है।

वर्तमान में सार्वजनिक खरीद में व्यय राशि का क्या महत्व है यह टांसपेरेन्सी इण्टरनेशनल के शोध पत्र से पता चलता है। वर्तमान में प्रत्येक देश के सकल धरेलू उत्पाद का औसत्म १५-२० प्रतिशत सार्वजनिक खरीद पर व्यय किया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सार्वजनिक खरीद पर व्यय राशि विश्व अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

विषय पर आगे बढ़ने से पूर्व निम्न बिन्दुओ पर विवेचन करना उचित होगा-

- सार्वजनिक खरीद

- पारदर्शिता

- भ्रष्टाचार

सार्वजनिक खरीद का तात्पर्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों व विभागों द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओ की नीलामी प्रक्रिया से है।

पारदर्शिता का तात्पर्य खरीद नीलामी प्रकिया में अपनायेजाने वाले नियम कानूनों के स्पष्ट उल्लेख से है।

भ्रष्टाचार का तात्पर्य व्यक्तिगत हितो के चलते सामान्य नियमों के विपरीत अनुचित प्रक्रिया अपनाकर अनुचित लाभ प्राप्त करने से है।

सावर्जनिक खरीद के लिये पूर्व में मानवीकृत प्रक्रिया अपनायी जाती थी जिनमें नीलामी खरीद हेतु निविदायें मँगवाई जाती थी। सभी प्रविष्टियों में न्यूनतम लागत वाली निविदा को स्वीकृति दे दी जाती थी। इस प्रक्रिया में भ्रष्टाचार हेतु बहुत से कमजोर चरण थे। प्राय: साँठगाँठ से, धमकी से, राजनैतिक दबाव से निविदा को अपने पक्ष में करवाना ठेकेदारों के लिये सामान्य बात थी। इसके चलते सार्वजनिक खरीद मे भ्रष्टाचार बहुत गहराई से पैठ गया।

जब किसी खरीद प्रक्रिया में भ्रष्टाचार पैठता है उसके बहुत से तष्टाणात्मक प्रभाव पड़ते है - सार्वजनिक राशि का पूर्ण प्रभावी परिणान्पुरव व्यय नहीं होता है प्राप्त सेवाओं वस्तुओं की गुणवत्ता निम्न स्तर होती है

फलस्वरूप राष्ट्र का विकास बाधित होता है। सार्वजनिक असुरक्षा की भावना पनपती है। इसे और व्यापक अर्थो में देखे तो राष्ट्र के नागरिकों का धन कुछ चुनिन्दा वर्ग के पास जमा होता है। राष्ट्र में अमीर गरीब की खाई चोड़ी होती जाती है।

इस तरह की पूर्व की प्रक्रिया में बहुत से ईमानदार अधिकारियों को अपनी जान भी गवानी पड़ी। सन्तेन्ड दुबे या एस मंजूनाय को कौन भूल सकता है। स्पष्ट है पूर्व की खरीद प्रक्रिया के चलते भारत में बहुत गहराई तक भ्रष्टाचार पनप रहा था।

तकनीक व प्राद्योगिकी का कुशल प्रभावी अनुप्रयोग भ्रष्टाचार के उन्मूलन में बहुत ही प्रभावी रहा है। यह पारदर्शिता को बढ़ाने में सहायक है। उक्त विचार के ध्यान में रखते हये भारत सरकार ने सन् २००६ में इ. गवर्नेस नीति की घोषणा की। इस नीति में सार्वजनिक खरीद के लिये ई. नीलामी की व्यवस्था की घई। इसके लिये ऑनलाईन डिजिटल हस्ताक्षर की स्वीकृति दे दी गई। इसके लिये सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम - २००० में कानूनी प्रावधान है। इस अधिनियम में ई. भुगतान (E- payment) को सुरक्षित व प्रभावी बनाने के प्रावधान है।

इस सम्मिलित प्रयासों से सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया के परिदृश्य में व्यापक बदलाव देखने को मिले। अब ई-नीलामी/खरीद के माध्यम से भारत सरकार को व्यापक विकल्प मिलने लगे। खरीद के लिये न केवल स्थानीय आपूर्तिकर्ता बल्कि राष्ट्रीय व विदेशी आपूर्तिकर्ता इन्टरनेट के माध्यम से प्रतिभाग करने लगे। इसके चलते लागत में कमी आयी तथा गुणवत्ता पक्षता में वृद्धि हुई। इसका व्यापक प्रभाव राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में देखनें में मिला। यह सब सम्भव हुआ केवल पारदर्शिता के चलते। ई. नीलामी में नगैर किसी दबाव के सभी आपूर्तिकर्ता प्रतिभाग एसे लगे। ई. भुगतात ने उन्हे अधिकारियो के पास चक्कर लगाने से बचाया जोकि भ्रष्टाचार के लिये बाह्य करने का माध्यम था।

भारतीय परिदृश्य में बहुत बदलाव पिछले कुछ वर्ष में देखने को मिला है। भारत सरकार ने सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता हेतु इसी वर्ष 'सार्वजनिक खरीद अधिनियम -२०१२' पारति किया। इस अधिनियम के महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नवत्। है.

१. खरीद प्रक्रिया के नियमों सीमाओं का स्पष्ट व पूर्ण प्रकाशन।

२. विभिन्न प्रकार की खरीद प्रक्रीया में विभिन्न प्रक्रियाओं के चलते लचीलेपन की व्यवस्था।

३. प्रोजेक्ट के पूर्ण करने की समय सीमा तथा भूगतान हेतु समय को निश्चित करना।

४. सार्वजनिक खरीद पोर्टल का निर्माण तथा इससे जूड़ी शिकायतों हेतु उच्च न्यायालय के जज की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन।

स्पष्ट है भारत सरकार ने सार्वजनिक खरीद मे पारदर्शिता के लिये प्रभावी कदम उठाये है। यह इससे भ्रष्टाचार मुक्ति का पहला चरण समझा जा सकता है। पारदर्शिता पर जोर देकर ही भ्रष्टाचार का उन्मूलय किया

जा सकता है। 'पारदर्शिता' किसी भी प्रक्रिया में असमानता को दूर करती है और सभी को समान अवसर उपलब्ध कराती है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि भारत में 'सार्वजनिक खरीद' हेतु जो प्रक्रिया अपनायी जा रही है उसने 'पारदर्शिता' के लिये उचित व्यवस्था है। बस जरूरी है प्रभावी क्रियान्वयन की। आशा की जा सकती है भविष्य में सार्वजनिक खरीद में पूर्ण पारदर्शिता होगी और भारत भ्रष्टाचार मुक्त देश बन पाएगा।

आशीष कुमार
निरीक्षक

लघु कथा : संत और बेरोजगार

विजय जी बेरोजगार व्यक्ति थे। अविवाहित थे। आयु चालीस पार कर गई थी। इस पर वह बहुत सनकी थे। एक महफिल में किसी से उलझ गए। ज्यादातर लोग विजय जी की बात स्वीकार कर लेते थे पर वह न माना। वह भी बेरोजगार था। तर्क पर करता गया। विजय जी को अपशब्द भी कहना शुरु कर दिया। आखिरकार विजय जी ही शान्त हो गये। वह भी लड़-झगड़ कर महफिल से चला गया। उसके जाने के बाद विजय जी अपने रंग में आ गये। उसे पीठ पीछे जमकर कोसा। अन्य लोगों से कहने लगे, मुझ जैसे संत को गाली दी है। इसकी या इसके परिवार में कोई मृत्यु के करीब है। उस बेरोजगार को विजय जी की बातें जानने को मिल गई पर वह वापस उलझने नहीं आया।

महीने भर बाद बेरोजगार के पिता मर गये, दिल का दौरा पड़ा था। बेरोजगार खुश था क्योंकि उसे अपने पिता की जगह नौकरी मिल गई थी। नौकरी मिलते ही बेरोजगार सभ्य हो गया। विजय जी के अहसान को बेरोजगार ने भुलाया नहीं। उसकी कोशिशों से विजय जी कोसने वाले संत के रुप में विख्यात हो गये।

आशीष कुमार
निरीक्षक

तुम्हें मन में विषाद नहीं करना चाहिए, क्योंकि विषाद बहुत बड़ा दोष है ।
- वाल्मीकि रामायण

ঙ৩ঙ৩

गूंगा कौन हैं ? जो समयाकूल प्रिय वाणी बोलना नहीं जानता है ।
- अमोघवर्ष

अखिल भारतीय (सी.आर.एस.सी.बी.) आमंत्रण क्रिकेट टुर्नामेन्ट 2012 - 13 की (झलकियाँ)

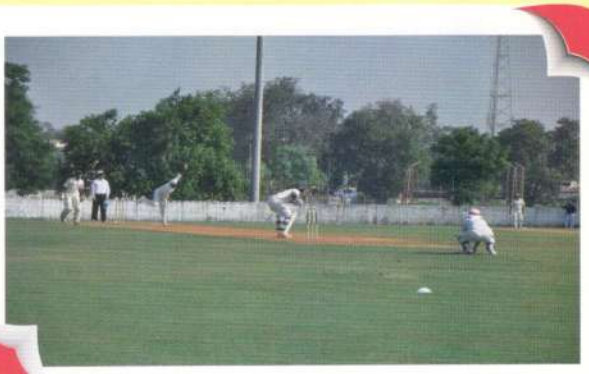

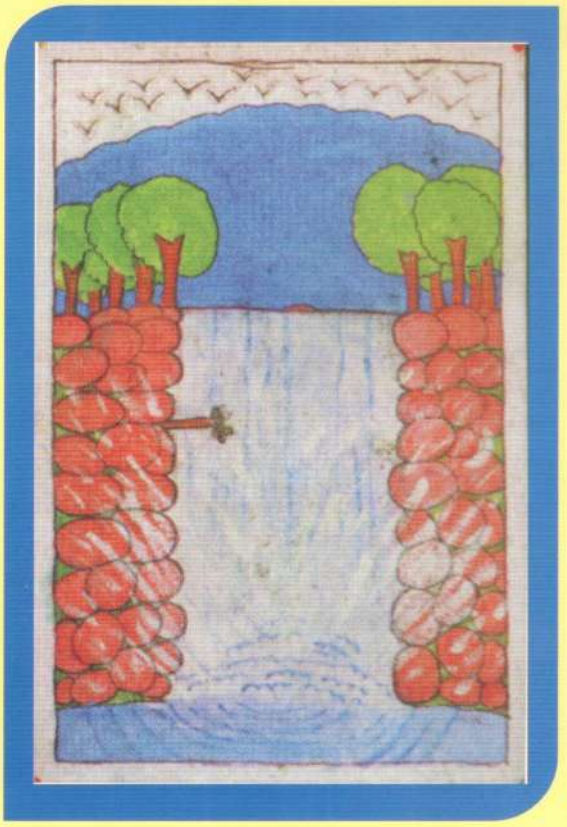

श्लोक सनतकुमार चौहाण कक्षा-8

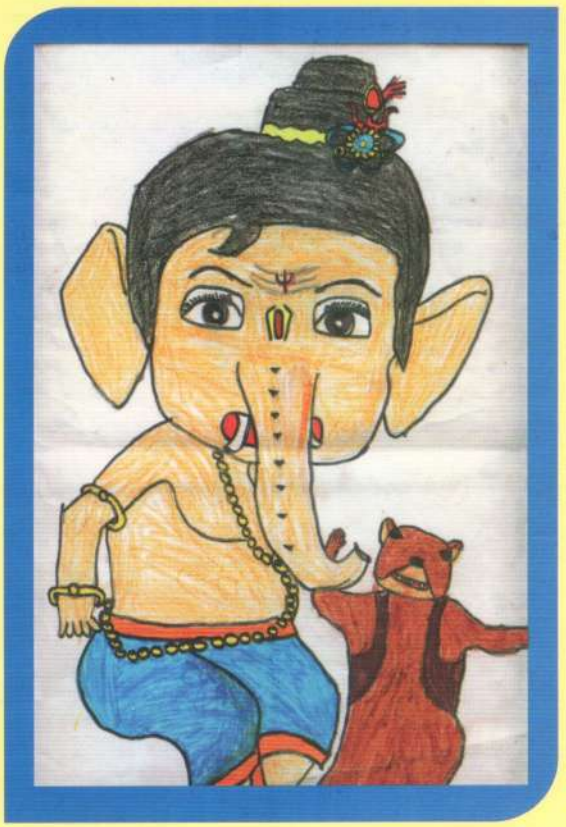

स्नेह सनतकुमार चौहाण कक्षा-1

श्री सनत जी. चौहाण
प्रशासनिक अधिकारी (मुख्यालय)
के पुत्रों द्वारा बनाये गये चित्र

श्री पीयूषकुमार एस. परमार, निरीक्षक की पुत्री द्वारा बनाये गये चित्र

Roaring Gir

"The clearest way into the Universe is through a forest wilderness."

- John Muir

In this fast world of ours, timetable and appointments dictates the walk of life. These days the thin line between work and life has emaciated to the extent that it has almost blurred. To come out from this stagnancy and to take a break from the routine busy life amidst the concrete jungles, jungle trekking is the best option. Here one can take simple pleasures of the mother nature and wild surroundings. To shatter the knots of monotony, I set out with my family and friends to visit the jungle of Gir (also known as Sasan-Gir), the only refuge of the impressive and majestic Asiatic Lions.

Gir forest is the only place in the world, outside Africa, where the lions can be seen in its natural habitat. From Biblical times till a hundred years ago, the Asiatic lion roamed over a vast area ranging from Greece through West Asia to Bengal and Bihar. The last Asiatic Lion seen outside Gir was in 1884, and the king of the jungle has taken his final refuge in Gir. With the beginning of

20th Century, Nawab Rasulkkhanji of Junagadh in Gujarat realized that about 15 lions were alive and also they were struggling for survival due to wide spread famine in region. At that time, the Junagadh Nawab decided to take immediate supportive steps for survival of handful of lions and provided adequate protection to the Lions and their population increased

The Asiatic Lion is a magnificent animal and it is pleasure to behold it .

between the years 1904 to 1911. After the independence in 1947, India formalised the Nawab's edicts by setting up lion reserves at this hilly forest, which is now known as Gir Conservation Area. Timely protection measures have raised their numbers to just over 400. It will be pertinent to note that Indians were the first in world to realise the importance of conservation of nature and animals. In 300 BC Kautilya, the mentor and the powerful minister of Chandragupta Maurya, wrote 'Arthshastra' and recounted a comprehensive method of conservation and forestry system by the name of 'Abhay Aranya' means forest free from fear. It may be the first ever documented system of living in peace and harmony with wild animals.

A real encounter to wild beast, 'The Royal Jungle King' was my cherished dream. The asiatic Lion is magnificent animal and it is pleasure to behold it . The lion has been with us for a long, long time. It is mentioned in our oldest texts and historical records. It figures in cave paintings, falk tales and falk believes. Interestingly, in the art of ancient India, there are far more depictions of lions than of tigers. The emperor Ashoka's royal pillars were crowned by lions surrounding the Buddhist Wheel of Law; this is now the state seal of India. Vishnu was incarnated as Narasimha, half man and half lion, not as a man-tiger. As the ultimate symbole of power among earthly creatures, the lion accupies the exalted status of a vehicle for Durga, one of the most highly revered of Hindu goddesses.

Summer in Gir is very hot and dry- Lion Queens accompanied by the adorable cubs quenching their thirst at Hiran River

After arriving at Sasan Gir, we got accommodation at the 'Sinh Sadan Guest House' a beautiful lodge run by the Forest Department having all the modern amenities. After spending a relaxing night, we were all set for a hectic day full of adventure and thrill. However, I was skeptical that I would see a lion because of my previous three unsuccessful trips to the Gir. But I packed my camera anyway hoping that the much celebrated king of beasts will not disappoint me this time. We opted for a jeep safari, as they are the best ways to explore the wide home of magnificent lions. Only designated jeeps and drivers are allowed to enter forest with one guide from the forest department. We were lucky to have experienced and expert acquainted guide Shri Tazubhai with us. No sooner we entered the forest we were welcomed by peacocks and chital deers. We also spotted Sambars-huge and spotless brown deer, Langurs, wild boar, Nilgais and many birds in numbers. Intersected by the rivers, Gir is a mix of low rocky hills and open areas and much of the terrine covered by the Teak-dominated dry deciduous type and brown, matching with the colour of the Lion's skin. This barren canvas made it far easier to spot the animals. There was silence everywhere and it was a hauntingly wild. Our eyes were keenly searching for any movement or sounds that would indicate the presence of this mighty beast. But no sighting yet. All of sudden our driver stopped the jeep. We find to the right side of our jeep few meters away, a group of Golden Jackals playing and drinking water at a water pond made by the authority. We were enjoying watching so many Golden Jackals together, but the experienced eyes of our well trained guide Shri Tazubhai noticed something else, he shouted that two cubs of the jackals are sinking in the water. After discussion, we decided to save them. I followed Tazubhi and driver, who rushed promptly towards the pond. As we moved, the other jackals ran away and hide behind

the tree. We noticed the two cubs were tired of making continuous fruitless attempt to come out from the pond to save their soul. Promptly and carefully Tazubhai brought them out. However we were at concern, as both of them were not making any movement, though they were breathing slowly. Tazubhi told us they might have gulped some water and he gently lifted them and hanged them down headed for few seconds and laid down again. We were happy and surprised, after few moments both the cubs stood up and ran away towards their family. With great satisfaction we returned to our jeep and proceeded in search of lions.

Mother lion surrounded by it cubs looking into the camera

In all silence, suddenly we were annoyingly startled by Tauzubhai's cellphone ringing loudly. Another jeep nearby had spotted some lions and called us over their location. It didn't take long to sight this majestic mammal. It was a wonderful scene magnetizing our eyes, a lioness sat quietly in the shade with two cubs, staring right at us. Amazingly the colour of lioness was merging with the background. Two magnificent males were also present with them. Our driver headed the jeep as close as possible, about 15 feet, to get a closer look and better angle at the lions. We were delighted at this first, lucky sighting. It was indeed like witnessing royalty and just like one would be tongue tied in front of kings and queen, I felt totally at a loss of words in front of the royal beast. I happily clicked some images of the Royal family of the King of Jungle in my camera. Soon it was time to head back to our lodge, as the time allowed for out morning session was almost over

The evening session was an anticlimax ! Our Guide Tazubhai choose to take us to a small river situated amidst the jungle, with a logic that at the evening time approx at 06.00 PM the lions comes there to drink water, before proceeding for hunting. At one spot we heard an alarm call. Sambar Deers and Langurs were crying in a certain tone. As told by Tazubhai, they do so on spotting a predator, especially a Leopard. In a tensed atmosphere we fruitlessly tried to spot the Leopard which was around us. Tazubhai told us Leopard sighting is rare, which requires more time and patience. But considering the time factor we preferred to stick to our mission to reach at the river timely. We reached the spot at the fixed time and what we had seen was a fabulous treat to our eyes. Three lioness with the most adorable cubs were there at the river bank in the different mood. Two lioness were drinking water from the river and the other one was sitting little far away from them. The royal cubs were rolling and jumping about the and generally enjoying the carefree days of their lives before they start learning about going out hunting their own food. It was indeed fascinating to catch images of the majestic mammals in their various subtlety of mood. Yet the excitement was not over. After thanking Tazubhai, we proceeded further. A little ahead, we came across another two young lions sitting on the hill. Their bloody face and breathing pattern were showing that they have just hunted an animal and finished their dinner. They were carelessly staring at us. I just managed to shoot some images of them and we drew back for our dinner.

We managed our dinner at the, Rambhai's Farm, which is Mango Orchard spread over 30 Beegha, just adjacent to the forest, on the bank of small river. We were fascinated to look many trees of world famous Kesar Mango of the Sasan- Gir around us. It is told that the great Mughal Emperor Akbar was very fond of Kesar Mangoes and he ordered an army of gardeners to raise 100,000 mango trees. We felt immense pleasure on exploring the farm. Rambhai, the farm owner, with all hospitality by heart, served unlimited Aam Ras (Mango Juice) and Kathiawadi (local) food, it was a great delight after the trip. Rambhai told us lions are visiting his farm frequently to drink water from the river at the end of their farm and rightnow it is time when they visit. It was getting dark and we decided to return to our lodge.

At end of our trip, we visited the Devadiya park, a fenced jungle, developed as interpretation zone by the authority, where one can have sure

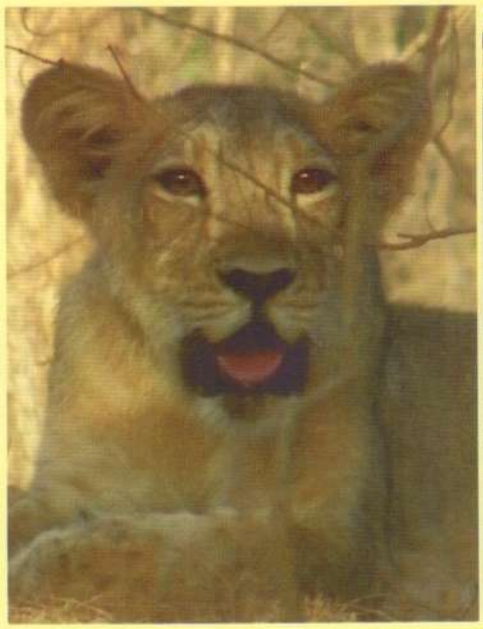

young lion after hunting

Male Lions live solitary life in the forest

Lions cubs are always playful as they prepare for adult life in a pride

Asian Paradise Flycatcher

Night Jar

shot of the lions. There we had seen five lions resting under a big tree.

During our trips we had also seen plenty of birds. Gir is extremely rich in wildlife and is a birdwatcher's paradise. I had photo opportunity to capture the images of various birds such as Asian Paradise Flycatcher, Oriental Robin Magpie, Indian Pitta, Black Ibis, Tickle blue Flycatcher, a peacock spreading its feathers, and a Night Jar which is a rarely sightable bird as told by our guide. A noted ornithologist Dr. Salim Ali said that if there were no lions here, Gir would be well-known as one of the best bird sanctuaries of the country.

Indeed, it was a gratifying trip for us. The jungle filled our mind and soul with its wild-charms, rawness and freshness. Bachchan, the great actor, after his visit to Gir, wrote on his blog " What a magnificent country we own. And it is only when you visit these places yourself , you realize it....!"

- By M.P Rathod,
Superintendent

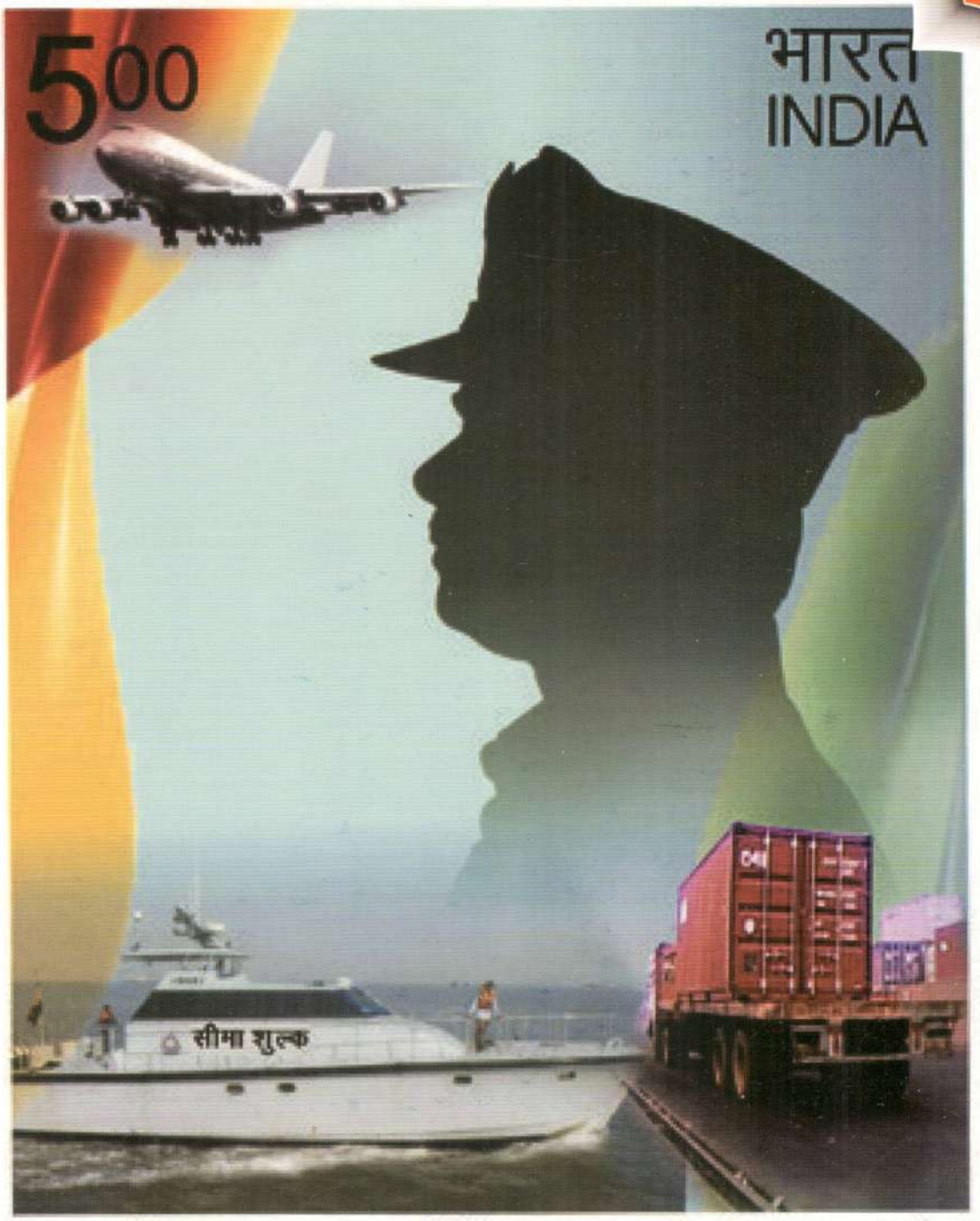

सीमा शुल्क अधिनियम,1962 के 50 वर्ष

50 YEARS OF CUSTOMS ACT,1962

Type Setting & Printed By - **Hariom Compuer 9376198829**
Desing By - **Darshan Design 9898103049**